इस अंक में

यतः सत्यं यतो धर्मो यतो हीरार्जवं यतः।
ततो भवति गोविन्दो यतः कृष्णास्ततो जयः ॥

अर्थ : जिस ओर सत्य, धर्म, लज्जा और सरलता है,उसी ओर गोविन्द रहते हैं और जहां भगवान् श्रीकृष्ण हैं, वहीं विजय है। – वेदव्यास (महाभारत, उद्योग पर्व; 68/9)

वर्ष : 10 अंक : 10

मातृवन्दना

मासिक

कार्तिक-मार्गशीर्ष, कलियुगाब्द 5112, नवम्बर, 2010

परामर्शदाता
सुभाष चन्द्र सूद

✡

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

✡

प्रबन्धक
नरेन्द्र कुमार

✡

वार्षिक शुल्क
साठ रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
शर्मा भवन, नया
शिमला-171 009
दूरभाष व फैक्स :
0177-2671990
e-mail:
matrivandana_shimla@yahoo.co.in
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला-171009 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

श्रीराम जन्मभूमि न्यायिक निर्णय : एक शुभ संकेत.....8

इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ का यह निर्णय अंततोगत्वा श्रीरामजन्मभूमि पर एक भव्य मंदिर के निर्माण का ही मार्ग प्रशस्त करेगा। मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, विश्वभर के हिन्दुओं के लिए देवतास्वरुप होने के साथ-साथ इस देश की पहचान, अस्मिता, एकात्मता, स्वातंत्र्याकांक्षा तथा विजिगीषा के मूल में स्थित जो हम सभी की राष्ट्रीय संस्कृति है उसकी मानमर्यादा के प्रतीक भी हैं।

सम्पादकीय	राम के अस्तित्व से जुड़े हैं दशहरा-दीपावली	5
प्रेरक प्रसंग	प्रेम बांटो तो आनन्द ही आनन्द	6
चिन्तन	अगर हिन्दू आतंकवादी होता तो	7
देवभूमि	धर्मांतरण के बाद भी नहीं मिली सुविधाएं	13
संगठनम्	हिमगिरी कल्याण आश्रम का रजत जयंति समारोह	14
पुण्य स्मरण	गुरु तेग बहादुर	15
देश-प्रदेश	जजों के खिलाफ हो सकेगी शिकायत	16
घूमती कलम	राष्ट्रमंडल खेलों में विजय का विजय अभियान	19
दृष्टि	अर्जुन बनेंगे एकलव्य	20
काव्य-जगत	संघर्ष	22
महिला जगत	महान नारी झांखो	23
स्वास्थ्य	वृद्धावस्था में अस्थियों की चोट एवं उपचार	24
विविध	जुबान सम्भाल के	25
पर्व	पंच पर्व है दीपावली	26
समसामयिक	कश्मीर अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की बिसात	28
कृषि	दूध गंगा योजना	31
विश्व दर्शन	चाण्क्य को नीदरलैंड में मान्यता	32
बाल जगत	धैर्य बनाए रखें	34

पाठकीय

पाठकों के पत्र.....

पहली ही नज़र में मातृवन्दना का सितम्बर अंक मन को छू गया। प्रेरक प्रसंग में 'क्या भारत राष्ट्र की कोई भाषा नहीं?' विषय ने हिन्दी भाषा की वर्तमान स्थिति को देखते हुए भारतीय सोच को बदलने की प्रेरणा दी। इस पत्रिका में गागर में सागर समाया हुआ है। बैलों को साप्ताहिक अवकाश, मध्य प्रदेश के शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल होगी गीता, भोजन के सामान्य नियम, स्वावलम्बन की ओर अग्रसर हिमाचल प्रदेश आलेख काफी रोचक व ज्ञानवर्धक लगे।

रवि सांख्यान, बिलासपुर

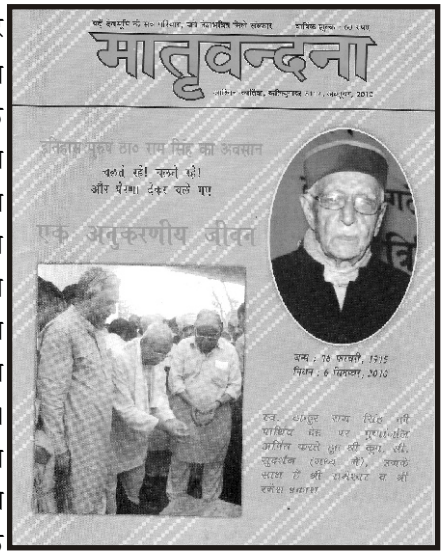

जम्मू-कश्मीर राज्य जब से भारत का अभिन्न अंग बना है तभी से पूरे देश के लिये सिरदर्द से कम नहीं। भारत में विलय के समय दी गई विशेष रियायतें जो धारा 370 के अंतर्गत जम्मू कश्मीर राज्य को मिली है वही अब देश के शासकों को परेशानी का कारण बनती जा रही है। देश के बजट का लगभग 15 से 20 प्रतिशत धन मात्र जम्मू कश्मीर पर खर्च हो रहा है। उधर भारत की 30 प्रतिशत से अधिक सैन्य ताकत जम्मू कश्मीर की सीमा पर तैनात होने से देश का अधिकांश रक्षा व्यय मात्र एक राज्य पर खर्च हो रहा है। जम्मू कश्मीर राज्य के लोगों को खास सुविधाएं देने तथा देश में कहीं भी नौकरियों में प्राथमिकता देने के बावजूद राज्य के कुछ लोग महान भारत के स्थान पर एक ऐसे देश के प्रति झुकाव रखते हैं जो कंगाल हो चुका है तथा अपने रोजमर्रा के खर्चे विदेशी सहायता से चला पाता है। इसके विपरीत भारत में सब तरह का खुलापन और स्वतंत्रता हर नागरिक को प्राप्त है। यदि इस सबके बावजूद जम्मू कश्मीर के लोग अपने प्रदेश के कश्मीरी पंडितों को प्रदेश से निकाल चुके हैं और सुरक्षा बलों पर हमला कर रहे हैं तो उन्हें 370 धारा की सुविधाएं देना कतई उचित नहीं है।

सुरेंद्र मिन्हास, बिलासपुर

कश्मीर अमरनाथ यात्रियों के साथ हुए हादसे को आपकी पत्रिका में पढ़ा तो दिल में काफी पीड़ा हुई। मातृवन्दना में प्रकाशित इस हिन्दू पीड़ा को जानकर दिल रो पड़ा। मैं सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत को मानने वाला हूं। इस सिद्धांत पर आस्था एवं विश्वास रखता हूं। मुझे इस बात का गर्व था कि मैं ऐसे देश में पैदा हुआ जो धर्मनिरपेक्ष है जहां सर्वधर्म समभाव का पाठ विश्व को संदेश है। किन्तु पिछले वर्ष के हादसे से मेरी आस्था को बहुत चोट पहुंची।

पक्षपात केवल हिन्दुओं से ही क्यों? जब एक मुसलमान को हज यात्रा के लिये इतने प्रबंध हैं कि जगह-जगह हज गेस्ट हाउस एवं सरकारी अनुदान पासपोर्ट, वीजा वाहन सुविधा में भारी छूट दी जा रही है विदेश जाने के लिये किन्तु हिन्दू अपने ही देश में अपने धन और जोखिम से भी धर्म यात्रा नहीं कर सकता है ऐसा क्यों?

कश्मीर हिन्दुस्थान का हिस्सा नहीं है क्या? क्या हिन्दू कश्मीर में नहीं रह सकते हैं यह कैसा कानून है? यह सभी प्रश्न मुसलमानों से नहीं केवल हिन्दुस्तानियों और हिन्दुओं से है। क्या कह सकेंगे हम कि हम धर्मनिरपेक्ष हैं? बोल पाएंगे कि सर्वधर्म समभाव का हम दृष्टिकोण रखते हैं।

तिलकान, शिल्ला सिरमौर

मातृवन्दना का पाठक हूं बहुत अच्छे विषयों पर लेख इस पत्रिका में मिलते हैं और संगठन की कई प्रकार की गतिविधियों की जानकारी भी प्राप्त होती है। 16 अगस्त गोस्वामी तुलसीदास जी की जयन्ती थी। इस महान कवि को कौन नहीं जानता। परन्तु एक भी लेख या स्मरण मात्र के लिये भी दो शब्द तक नहीं छप सके। पहले संस्कृत शब्दों की शब्द माला पढ़ने को मिलती थी पर अब वो भी नहीं, हिन्दी भाषा और संस्कृत भाषा के लिये कम से कम एक पेज तो देना ही चाहिये।

सुरेंद्र, बठेड़ा, हमीरपुर

स्मरणीय दिवस (नवम्बर)

दीपावली	5 नवम्बर
गोवर्धन पूजा	6 नवम्बर
भाईदूज	7 नवम्बर
गुरु नानक जयंती	21 नवम्बर
गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस	24 नवम्बर

राम के अस्तित्व से जुड़े हैं दशहरा-दीपावली

भारतीय वैदिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक परम्परा के अनुरूप ही अपने इस देश में पर्व, त्यौहार एवं उत्सव मनाए जाते हैं। दशहरा और दीपावली,ये दोनों त्यौहार मर्यादा पुरुषोत्तम राम के अस्तित्व और उनके प्रति प्रत्येक भारतीय की आस्था के प्रतीक हैं। सभी भारतीय परस्पर प्रेमपूर्वक बड़ी श्रद्धा एवं उल्लास से ये त्यौहार मनाते हैं। राम की आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्ति के उपलक्ष्य पर देश भर में दशहरा मनाया जाता है। चौदह वर्ष के वनवास में दुर्गम दक्षिण क्षेत्रों में संचरण करते हुए, जनजातीय एवं कबीले के लोगों को अपना मित्र बनाते हुए तथा शत्रुओं को परास्त करते हुए राजा राम ने सर्वत्र अपने दिव्य गुणों का प्रसार किया। श्रीलंका में रावण को परास्त कर सीता सहित जब वह अयोध्या वापिस लौटे तो अयोध्यावासियों ने अपनी खुशी का इजहार करते हुए पूरी नगरी में घी के दीपक जलाकर उनका स्वागत किया। उसी का प्रतिरूप दीपावली पर्व है।

इस कलियुगाब्द 5112 में फिर एक बार रामलला ने अपने विरुद्ध आचरण करने वाली शक्तियों को परास्त किया है। एक बार पुन: अपनी जन्मस्थली अयोध्या मंदिर में अधिष्ठित हुए हैं। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्डपीठ के तीन माननीय न्यायाधीशों ने रामलला के जन्मस्थल पर कानूनी मोहर लगाकर इस वर्ष के दशहरा और दीपावली को सचमुच में और अधिक सार्थक बना दिया है। इतिहास गवाह है कि जब-जब देश की आजादी और अखण्डता पर आंच आई और विदेशी ताकतों ने अतिक्रमण किया तो जयचंद सरीखे अपनों ने ही अपनों को धोखा देकर उन विदेशी ताकतों का साथ दिया। यही स्थिति अंग्रेजों के शासनकाल तक रही। अंग्रेजों ने तो 'फूट डालो राज करो' की नीति का भरपूर लाभ उठाया और इस मानसिकता के ऐसे बीज बोए कि फसल लुटेरे स्वतंत्रता के सातवें दशक में भी इसी के बलबूते निहित स्वार्थों की पूर्ति में लगे हुए हैं जिसका सीधा-सा उदाहरण इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्डपीठ के निर्णय की प्रतिक्रिया है। अयोध्या मामले में दोनों पक्षकारों ने शांति और धैर्य का परिचय दिया। यहां तक कि मुसलमानों की ओर से मुख्य पक्षकार हाशिम अंसारी ने मेल-मिलाप से बातचीत कर हल निकालने का विचार अभिव्यक्त किया। हिन्दू संगठनों ने भी उत्तेजना रहित होकर इस अयोध्या फैसले का स्वागत किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख माननीय मोहन राव भागवत जी ने भी इस निर्णय को सभी समुदायों के बीच तालमेल को बढ़ावा देने का सुनहरा अवसर बताया। मूल पक्षकारों को दरकिनार कर अब नए खिलाड़ी मैदान में उतर रहे हैं। इनमें अधिकांश वही हैं जो तुष्टिकरण की नीति से मुस्लिम समुदाय को अपनी ओर आकृष्ट कर राजनीतिक रोटियां सेंकने के आदी हैं और तथाकथित छद्म धर्मनिरपेक्ष छवि बनाकर सत्तासुख भोगने के लिये सर्वदा लालायित रहते हैं। वामपंथी विचार धारा का बुद्धिजीवी वर्ग भी कहां चुप बैठने वाला है- उसने पुन: इतिहास खंगालने का प्रयास शुरू कर दिया है। उधर मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड सुप्रीम कोर्ट जाने की तैयारी कर चुका है और हिन्दू महासभा ने भी जवाब में अदालत जाने की तैयारी कर ली है। शीर्ष न्यायालय के द्वार भले ही खुले हुए हैं किन्तु यह विवाद बातचीत एवं आपसी सहमति से सुलझा लिया जाए तो अच्छा है। ❑

प्रेम बांटो तो आनंद ही आनंद

प्रेम बांटने से बढ़ता है घटता नहीं। संत जन एक दृष्टांत देते हैं कि एक बार तीन सन्यासी जो जितेंद्रिय, परम संत और आचार्य थे, एक निर्जन वन में तपस्या कर रहे थे। उन्होंने अपना कोई आश्रय या कुटीर नहीं बनाई थी। केवल वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या में लीन रहते थे। एक बार सहसा घनघोर वर्षा होने लगी। दिन-रात कई दिनों तक वर्षा होती रही। ठंड के कारण शरीर ठंडे पड़ने लगे। कहीं सिर छिपाने की जगह नहीं थी। अंधेरी रात, वर्षा और ठंड से सिकुड़ते हुए एक तपस्वी ने एक वृक्ष के अन्दर एक कोटरी (खोखली जगह) देखी और वे वहां जाकर लेट गए। थोड़ी देर बाद दूसरे तपस्वी छिपने के लिये स्थान खोजते हुए उसी कोटर पर पहुंचे और देखा कि उसमें एक संत लेट रहे हैं। लेटे हुए संत ने कहा– यहां आ जाइए, हम दोनों इसी में बैठ सकते हैं। यदि एक लेट सकता है तो दो मनुष्य बैठ सकते हैं। इतने में ही तीसरे संत छिपने के लिये स्थान खोजते हुए वहां जा पहुंचे। उनकी आहट सुनकर अन्दर के एक संत ने कहा यदि हम दो बैठ सकते हैं तो इस कोटर में तीन व्यक्ति खड़े भी हो सकते हैं। अत: अन्दर ही आ जाइए, हम तीनों ही खड़े हो सकते हैं। उस कोटर में तीनों ही खड़े होकर रात्रि में भगवान नारायण का कीर्तन करने लगे।

उन तीनों भक्तों के सद्विचारों को देखकर भगवान नारायण बहुत प्रसन्न हुए और एक संत के ही रूप में उस कोटर में प्रकट हो गए। कीर्तन करते हुए जब वे तीनों आपस में सिमटने लगे तो उन्होंने देखा कि कोटर में एक चौथा व्यक्ति भी खड़ा है। उन्होंने बड़े आश्चर्य के साथ पूछा कि हम तो तीन लोग थे, आप चौथे कौन हैं और कहा से आ गए? तब भगवान नारायण ने स्वयं कहा कि मैं आप तीनों की निष्ठा, तपस्या, आस्था, शरणागति और सद्विचार तथा उदार भावना से आप लोगों पर प्रसन्न हूं। आप मुझसे वर मांगें। तब उन संतों ने प्रभु से शरणागति की याचना की और कहा कि भविष्य में हमारे जो भी शरणागत भक्त हैं और होंगे उन्हें भी आप अपने श्री चरणों में स्थान देकर अपने बैकुण्ठधाम प्रदान करें, यही हमारी कामना है। ऐसा सुनकर एवमस्तु कह कर भगवान नारायण वहां से अन्तर्यान हो गए। सच ही है– 'प्रेम से परमात्मा प्रकट होते हैं।' ❑

सादगी

सादगी को संसार में मनुष्य का सुंदरतम गहना माना गया है। इंग्लैंड के प्रधानमंत्री ग्लैंड स्टोन बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे। वे अपने कपड़े तक स्वयं ही साफ करते थे और बाजार से सब्जी आदि भी स्वयं साइकिल पर लेकर आते थे। एक बार रेल यात्रा के दौरान किसी समाचार पत्र के संपादक ने उनसे किसी स्टेशन पर मिलने की अनुमति मांगी। उन्होंने तुरंत हां कर दी। निर्धारित स्टेशन पर संपादक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में प्रधानमंत्री को ढूंढने लगे, पर वे उन्हें कहीं नहीं दिखाई दिये। अचानक एक युवक ने उससे पूछा कि क्या आप प्रधानमंत्री को ढूंढ रहे हैं?वे तो दूसरी श्रेणी के डिब्बे में सफर कर रहे हैं। संपादक जब वहां पहुंचे तो उन्हें प्रधानमंत्री एक सीट पर अखबार पढ़ते मिले। संपादक महोदय ने आश्चर्य से पूछा, 'आप प्रधानमंत्री होकर भी दूसरे दर्जे में सफर कर रहे हैं वह तो अच्छा हुआ प्रथम श्रेणी में बैठे एक युवक ने मुझे आपका पता बता दिया, नहीं तो मैं शायद ही आपको खोज पाता।' ग्लैंड स्टोन बोले, हां, वहां मेरा बेटा बैठा है, उसी ने आपको मेरे बारे में बताया होगा। संपादक के आश्चर्यचकित होने पर प्रधानमंत्री का उत्तर था, 'भाई मैं एक किसान का बेटा हूं, पर वह तो प्रधानमंत्री का पुत्र है, उसे प्रथम श्रेणी में यात्रा करना सुविधाजनक लगता है और मुझे द्वितीय श्रेणी में।' ❑

श्रीराम की विनयशीलता

अयोध्या के राजमहल में महर्षि वशिष्ठ अचानक पहुंचे। श्रीराम-सीता ने उनका स्वागत किया। उच्चासन पर बिठाकर स्वयं उनके चरणों में बैठ गए। श्रीराम बोले, 'गुरुदेव क्या आज्ञा है, बताइये?' वशिष्ठ जी ने कहा, 'राघव, कल आपका राज्याभिषेक है। आज आपको व्रत करना है। धरती पर सोना है। फलाहार करना है।' वशिष्ठ जी उन्हें बताकर लौट गए। राज्याभिषेक की बात सुनते ही श्रीराम का चेहरा उदास हो गया। सीता जी ने पूछा, 'आप राज्याभिषेक की जानकारी मिलते ही उदास क्यों हो गए?'

श्रीराम ने कहा, 'जानकी, हम चारों भाइयों का बचपन एक साथ बीता। हम चारों का विवाह भी एक साथ हुआ, किन्तु अब यह अनुचित लग रहा है कि मैं बड़ा होने के कारण राजा बन जाऊंगा और तीनों भाई गद्दी से वंचित हो जाएंगे। मेरी दृष्टि में रघवंश की बड़े को गद्दी देने की रीति उचित नहीं है। बड़ा भाई यदि छोटे भाई से अधिक प्रजापालक व सत्यवादी न हो, तो भी बड़े को ही राज्य सौंपने की नीति मैं उचित नहीं मानता।'

श्रीराम अपने अनुज भरत को अपने से ज्यादा तपस्वी, सत्यवादी व योग्य मानते थे। यह उनकी सत्ता के प्रति विरक्ति व विनयशीलता का ज्वलंत प्रमाण है। इसीलिये जब कैकेयी के षड्यंत्र के कारण श्रीराम को गद्दी से वंचित किया गया, तो वह मन ही मन खुशी से झूम उठे थे।❑

अगर हिन्दू आतंकवादी होता तो...

राजनीतिक दलों के सिपहसालार वोट बैंक के लिये हिन्दू संगठनों से जुड़े चंद आक्रोशित लोगों की प्रतिक्रियाओं को 'हिन्दू आतंकवाद' करार दे रहे हैं। ऐसा करके मीडिया भी पूरे हिन्दू समाज को अपमानित कर रही है। जबकि यही लोग ऐसे बयान देते नहीं थकते कि आतंकवादी केवल आतंकवादी होता है, उसका कोई धर्म नहीं होता। मुस्लिम आतंकवादियों के कारण पूरे समाज को कटघरे में खड़ा नहीं किया जा सकता तो फिर कुछ कट्टरपंथियों की कारगुजारी के कारण हिन्दू आतंकवाद का दुष्प्रचार क्यों?

अगर हिन्दू आतंकवादी होता तो...

- क्या हिन्दुस्थान के तीन टुकड़े यानी हिन्दुस्थान, पाकिस्तान, बांग्लादेश हुए होते?
- क्या हिन्दुस्थान, पाकिस्तान और बांग्लादेश में यानी अविभाजित हिन्दुस्थान में मुसलमानों की इतनी संख्या होती?
- क्या इण्डोनेशिया और मलेशिया मुस्लिम बहुल देश हुए होते?
- क्या विभाजित हिन्दुस्थान यानी भारत पंथनिरपेख होता और यह एक अपने नाम के अनुसार हिन्दू राष्ट्र नहीं होता, और इसका राजधर्म हिन्दू नहीं होता?
- क्या विभाजित हिन्दुस्थान में चार लाख कश्मीरी हिन्दुओं (पंडित) को कश्मीर से बाहर निकाले जाकर शरणार्थी बनकर रहना पड़ता?
- क्या लगभग 300 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष की हज सबसिडी मुसलमानों को हज करने के लिये सऊदी अरब जाने के लिये दी जाती और हिन्दू तीर्थयात्रियों पर जो अमरनाथ जी की और वैष्णोदेवी की यात्रा पर जाते हैं टैक्स लगाने का दुस्साहस किया जाता?
- क्या गोधरा रेल स्टेशन पर हिन्दू रामभक्त तीर्थ यात्रियों को जीवित जलाया जाने की हिम्मत होती?
- क्या हिन्दुस्थान के प्रधानमंत्री यह कह सकते कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार मुसलमानों का है?
- क्या सत्ता में जमी कांग्रेस पार्टी, इसको समय-समय पर सहभागी/समर्थन देने वाली पार्टियां जैसे मुलायम सिंह यादव की समाजवादी पार्टी, रामविलास पासवान, कम्युनिस्ट पार्टियां तथा दूसरी छुटभैया पार्टियां आदि हिन्दुओं को आतंकवादी घोषित करने का दुष्चक्र चलाने की हिम्मत कर सकती?
- क्या देशभक्तों, देशप्रेमियों तथा निष्ठावान पार्टियों को देशद्रोही घोषित करने की हिम्मत होती? ❑

यदि अनाधिकृत रीति से आप देश की सीमा रेखा पार करोगे? तो.....

उत्तर कोरिया की सीमा रेखा पार करोगे...

- तो आपको 12 साल का सश्रम कारावास होगा।

ईरान की सीमा पार करोगे...

- तो आपको अनिश्चितकाल तक जेल में रहना पड़ेगा।

अफगानिस्तान की सीमा रेखा पार करोगे...

- तो आपको गोलियों से दाग दिया जाएगा।

सऊदी अरब की सीमा रेखा पार करोगे...

-तो 5 साल की जेल होगी।

चीन की सीमा पार करोगे...

- तो आपको मृत्युदण्ड मिलेगा।

वेनेजुएला की सीमा रेखा पार करोगे...

-तो आपको खुफिया एजेंट बताकर आपकी जिन्दगी अंधकारमय बना दी जाएगी।

क्यूबा की सीमा रेखा पार करोगे...

-तो मरते दम तक आपको जेल में रहना होगा।

रूस की सीमा रेखा पार करोगे...

-तो आपको गिरफ्तार कर आपके ऊपर अभियोग चलाया जाएगा और देश के बाहर निकाल दिया जाएगा।

परन्तु... आप यदि पाक नागरिक या बंगलादेशी हैं तथा अनाधिकृत रूप से भारत की सीमा पार करके आए हैं तो आपको प्राप्त होंगे...-राशनकार्ड, -पासपोर्ट (एक या अधिक), हज-यात्रा हेतु अनुदान, ड्राइविंग लाइसेंस, मतदाता पहचान-पत्र, नौकरी में आरक्षण, भारत की साधन-सम्पत्ति पर पहला अधिकार, क्रेडिट कार्ड, मकान बनाने हेतु कम ब्याज दर पर ऋण, मुफ्त शिक्षा एवं आरोग्य सेवा, सहायता हेतु मानवाधिकार के कार्यकर्ता, मीडिया के विभिन्न चैनलों के पत्रकार, मतदान एवं धर्मनिरपेक्षता पर बोलने का अधिकार।

छद्म धर्मनिरपेक्षवादियों की जय हो। ❑

विजयदशमी के अवसर पर सरसंघचालक माननीय मोहनराव भागवत ने कहा

श्रीरामजन्मभूमि न्यायिक निर्णय : एक शुभ संकेत

प्राचीन समय से अपने देश में धर्म की विजय यात्रा के प्रारम्भ दिवस के रूप में सोत्साह व सोल्लास मनाये जानेवाला यह विजयदशमी का पर्व इस वर्ष संपूर्ण राष्ट्र के जन-मन में, 30 सितंबर 2010 को श्री रामजन्मभूमि के विषय को लेकर मिले न्यायिक निर्णय से व्याप्त आनन्द की पृष्ठभूमि लेकर आया है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ का यह निर्णय अंततोगत्वा श्रीरामजन्मभूमि पर एक भव्य मंदिर के निर्माण का ही मार्ग प्रशस्त करेगा। मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, विश्वभर के हिन्दुओं के लिए देवतास्वरुप होने के साथ-साथ इस देश की पहचान, अस्मिता, एकात्मता, स्वातंत्र्याकांक्षा तथा विजिगीषा के मूल में स्थित जो हम सभी की राष्ट्रीय संस्कृति है उसकी मानमर्यादा के प्रतीक भी हैं। इसीलिए हमारे संविधान के मूलप्रति में स्वतंत्र भारत के आदर्श, आकांक्षाएँ तथा परम्परा को स्पष्ट करनेवाले जो चित्र दिये हैं, उसमें मोहनजोदड़ो के अवशेष तथा आश्रमीय जीवन के चित्रों के पश्चात् पहला व्यक्तिचित्र श्रीराम का है। श्री गुरू नानक देव जी ने सन 1526 में समग्र भारत का भ्रमण करते हुए श्री रामजन्मभुमि के दर्शन किये थे। यह बात सिख पंथ के इतिहास में स्पष्ट उल्लिखित है। ऐतिहासिक, पुरातात्विक तथा प्रत्यक्ष उत्खनन के साक्ष्यों के आधार पर श्रीरामजन्मभूमि पर इ.स. 1528 के पहले कोई हिन्दू पवित्र भवन था, यह बात मान ली गई।

नियति द्वारा प्रदत्त शुभ अवसर

श्री रामजन्मभूमि सम्बंधित न्यायिक प्रक्रिया 60 वर्ष तक खींची जाने के कारण संपूर्ण समाज की समरसता में विभेद का विष व संघर्ष की कटुता व पीड़ा को घोलनेवाला, एक अकारण खड़ा किया गया विवाद समाप्त कर, अपनी राष्ट्रीय मानमर्यादा के प्रतीक मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम की अयोध्या स्थित जन्मभूमि पर उनका भव्य मंदिर बनाने के निमित्त, हम सभी को बीती बाते भूलकर एकत्र आना चाहिए। यह निर्णय अपने देश के मुसलमानों सहित सभी वर्गों को आत्मीयतापूर्वक मिलजुलकर एक नया शुभारम्भ करने का नियति द्वारा प्रदत्त एक अवसर है यह संघ की मान्यता है। अपनी संकीर्ण भेदवृत्ति, पूर्वाग्रहों से प्रेरित हट्टाग्रह तथा संशयवृत्ति छोड़कर, अपने मातृभूमि की उत्कट अव्यभिचारी भक्ति, अपनी समान पूर्वज परंपरा का सम्मान तथा सभी विविधताओं को मान्यता, सुरक्षा व अवसर प्रदान करनेवाली, विश्व की एकमेवाद्वितीय, विशिष्ट, सर्वसमावेशक व सहिष्णु अपनी संस्कृति को अपनाकर, स्व. लोहिया जी के शब्दों में भारत की उत्तर दक्षिण एकात्मता के सृजनकर्ता श्रीराम का मंदिर जन्मभूमि पर बनाने के लिए हमें एकत्रित होना चाहिए। यही संपूर्ण समाज की इच्छा है। 30 सितंबर को निर्णय आने के पश्चात समाज ने जिस एकता व संयम का परिचय दिया वह इसी इच्छा को स्पष्ट करता है।

षड्यंत्रकारियों से सावधान

परन्तु राष्ट्रीय एकता के प्रयासों के लिए प्राप्त इस अवसर को भी तुष्टिकरण और वोट बैंक की राजनीति के स्वार्थसाधन का हथियार बनाने की दुर्भाग्यपूर्ण चेष्टा, निर्णय के दूसरे दिन से ही प्रारम्भ हुयी हम देखते है। पंथ, प्रान्त, भाषा की हमारी विविधताओं को आपस में लड़ाकर मत बटोरने वाले यही कुछ लोग, एक तरु मुख से 'सेक्युलॅरिज्म' का जयकारा लगाकर, बड़ी-बड़ी गोलमटोल बातों को करते हुए सामाजिक सद्भाव को बिगाड़ने के सूक्ष्म षडयंत्र को रचते हुए सद्भाव निर्माण करनेवाले प्रसंगों व प्रयत्नों में बाधा डालते रहते हैं। माध्यमों व तथाकथित बुद्धिजीवियों में भी अपने भ्रामक विचार का अहंकार पालनेवाले, हिन्दू विचार व हिन्दू के लिए चलनेवाले प्रयासों के पूर्वाग्रहग्रसित द्वेष्टा, व अपने स्वार्थों व व्यापारिक हितों के लिए सत्य, असत्य की परवाह न करते हुए **'न भयं न लज्जा'** ऐसा व्यवहार करनेवाले कुछ लोग हैं। 30 सितम्बर को दोपहर 4:00 बजे तक की इनकी भाषा तथा निर्णय आने के पश्चात् की भाषा व व्यवहार का अंतर देखेंगे तो यह बात आप सभी के ध्यान में आ जायेगी। समाज के विभिन्न वर्गों में एक दूसरे के प्रति अथवा एक दूसरे के संगठनों के प्रति भय व अविश्वास **(शेष पृष्ठ 12 पर)**

अयोध्या में श्रीराम मंदिर बनेगा- न्यायालय की पुष्टि

अन्ततः 60 साल से चिर प्रतीक्षित अयोध्या प्रकरण पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने सर्वसम्मति से विवादित स्थल पर श्रीरामलला का दावा स्वीकार किया। तीन न्यायाधीशों ने बहुमत के आधार पर विवादित ढांचे का गर्भगृह वाला हिस्सा हिन्दुओं को, उसके सामने स्थित राम चबूतरा एवं सीता रसोई निर्मोही अखाड़े को और एक अन्य हिस्सा सुन्नी वक्फ बोर्ड को देने के आदेश दिये। इस फैसले से देश में अमन चैन का माहौल बना रहा और सामान्य नागरिकों ने इसे एक साहसिक, संतुलित एवं ऐतिहासिक फैसला माना।

उच्च न्यायालय के इस ऐतिहासिक फैसले का मुख्य आधार यह साक्ष्य रहा कि विवादित ढांचे को मंदिर अथवा मंदिर के मलबे पर बनाया गया था। ये साक्ष्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की विस्तृत खोजपूर्ण रपट से मिले। सन् 2003 में एएसआई को अयोध्या में विवादित स्थल की खुदाई का आदेश कोर्ट ने दिया था ताकि वहां पहले से राममंदिर होने का प्रमाण पाया जा सके। हाईकोर्ट के निर्देश पर एएसआई ने 12 मार्च, 2003 से 7 अगस्त, 2003 तक 82 स्थानों पर गहरी खाइयां खोद कर वहां की भूमि फर्श उससे मिली विभिन्न रचनाएं, वस्तुएं, भग्न मूर्तियां आदि गहरी वैज्ञानिक, फॉरेंसिक जांच पड़ताल कर अपनी रिपोर्ट हाईकोर्ट को सौंपी जिसमें 1000 वर्ष से विवादित स्थल के नीचे विशाल मंदिर के ढांचे, अवशेषों की पुष्टि की। इस फैसले ने उन तमाम मुसलमानों की यह आशंका दूर कर दी कि हिन्दू संगठन बेवजह विवादित स्थल को रामजन्मभूमि बता रहे हैं उनके समक्ष यह स्पष्ट हो गया कि विवादित ढांचा एक विशाल मंदिर स्थल पर बना था। जजों ने अपने फैसले में यह भी लिखा है कि मस्जिद का निर्माण इस्लामी मान्यताओं के हिसाब से नहीं किया गया है।

इस मुकदमें के पक्षकारों ने जहां संयम और सद्भाव दिखाया वहीं कुछ जाने-माने तथाकथित सैकूलर वामपंथी बुद्धिजीवियों ने अपनी ओछी प्रतिक्रियाएं भी व्यक्त की। 30 सितम्बर को चार बजे तक जो लोग कानून की सर्वोच्चता और संविधान की प्रशंसा के कसीदे काढ़ रहे थे अचानक तब पलट गए जब पता चला कि न्यायालय ने सुन्नी बोर्ड की याचिका खारिज कर दी है और रामलला के ईश्वरीय रूप को स्वीकार करते हुए उन्हें अपनी जन्मभूमि पर अधिकार दे दिया है।

उच्च न्यायालय के फैसले की खास बात यह है कि उससे न तो कोई हारा और न ही जीता। इस फैसले से यदि कुछ स्पष्ट है तो यह कि न्यायालय ने भारतीय संस्कृति-सभ्यता और राष्ट्रवाद के प्रतीक भगवान् श्रीराम को ऐतिहासिक संवैधानिक मान्यता प्रदान की। देश को नेतृत्व दे रहे सभी राजनीतिक दलों एवं अन्य संगठनों को यह चाहिये कि जिस तरह न्यायालय ने भगवान राम की महत्ता को समझा और मुस्लिम समाज की भावनाओं को महत्व दिया उसे लेकर ओछी राजनीति न करें तथा न्यायालय के निर्णय का उचित सम्मान करें। ❑

सुभाषचन्द्र सूद

भारत के मुसलमान ध्यान दें!

भारत का एक प्रतिनिधिमंडल 1969 में अफगानिस्तान गया था। उसमें सुप्रसिद्ध विचारक, अफगानिस्तान नीति के विशेषज्ञ डॉ. वेदप्रताप वैदिक भी थे वे बाबर की कब्र देखने गए। वह कब्र जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थी। उन्होंने एक अफगानी नेता से पूछा, बाबर के कब्र की ऐसी दुरावस्था क्यों? अफगान नेता की उत्तर था- बाबर का हमारा क्या सम्बंध था? बाबर एक विदेशी हमलावर था, उसने हमारे ऊपर आक्रमण किया, हमें गुलाम बनाया। वह मुसलमान था इसीलिए यह कब्र हमने गिरायी नहीं। परन्तु जिस दिन गिरेगी, उस समय हरेक अफगानी को आनंद होगा। बाबर हमारा शत्रु था, यह बोलने वाले श्री बबरक करमाल 1981 में अफगान प्रधानमंत्री बने। उनकी भावना भारत के मुसलमानों को ध्यान में लेनी चाहिये।

ईरान मुस्लिम देश है परन्तु वे रुस्तम, सोहराब को राष्ट्रीय पुरुष मानते हैं। रुस्तम, सोहराब तीन हजार साल पहले हुए और वे पारसी थे, मुस्लिम नहीं। मिस्रदेश में पिरामिड राष्ट्रीय प्रतीक है। पिरामिड साढ़े तीन हजार वर्ष पूर्व के हैं और उस समय इस्लाम था ही नहीं। भगवान् राम हजारों वर्ष पूर्व हुए, उस समय इस्लाम था ही नहीं। भारत के मुसलमान भी 200-400-800 साल पहले हिन्दू ही थे। तो भारत के मुस्लिम राम को अपना पूर्वज, भारत का राष्ट्रीय महापुरुष क्यों नहीं मानते? ❑

विनायकराव देशपाण्डे

क्या था एएसआई की रिपोर्ट में

अयोध्या के जमीन विवाद पर हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच के फैसले में आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) की रिपोर्ट की अहम भूमिका रही है, जिसमें यह पुष्टि की गई थी कि विवादित स्थल पर पहले मंदिर था। 12 मार्च से 7 अगस्त 2003 के बीच विवादित स्थल पर खुदाई की थी, इसके लिये 82 स्थानों पर गहरी खाइयां खोदी गई। गड्ढे खोद गए। वहां जो संरचनाएं मिली उससे संकेत मिलते हैं कि उस जगह पर कभी खंभों वाला कोई ढांचा था। छत व फर्श के अवशेष होने के भी संकेत मिले हैं।

(ईसा पूर्व दूसरी से पहली शताब्दी)

पक्की मिट्टी की देवी मूर्तियों के अवशेष मिले। मनुष्यों एवं जानवरों की आकृतियों वाली मूर्तियां, बालों में लगाई जाने वाली चिमटी, काली पट्टी वाले लाल व भूरे मिट्टी के बर्तन, मुहर, पत्थर और ईंट का स्थापत्य (ढांचा) मिला। इस दौरान यहां ईंट व पत्थर के निर्माण किये गए। पक्की मिट्टी से बनी वस्तुओं के अवशेष व पत्थरों के अवशेष भी यहां से मिले हैं।

कुषाण काल - (पहली से तीसरी ईसवी) बड़ी-बड़ी मूर्तियों व भारी निर्माण होने के भी संकेत।

गुप्त काल - (चौथी ईस्वी) कुषाण काल जैसी ही स्थिति मिली।

उत्तर गुप्त काल व राजपूत काल

(सातवीं से दसवीं ईस्वी) ईंटों का अस्तित्व मिला। एक गोलाकार ढांचा मिला। पहली बार ऐसी चीजें मिलीं जिससे वहां निर्माण के संकेत मिलते हैं। जिस ढांचे का अवशेष मिला उसमें जाने का रास्ता पूरब से था। गंगा-जमुना मैदान में बनने वाले मंदिरों की प्रमुख विशेषता उत्तर दिशा में जल निकासी है। इस ढांचे से पानी निकालने के लिये नाली उत्तर दिशा में है।

प्रारम्भिक मध्यकाल (11-12 वीं ईस्वी)

इसी निर्मित भवन के शिखर पर 16वीं शताब्दी के प्रारम्भ में विवादित ढांचा खड़ा किया गया। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि विवादित स्थल के ठीक नीचे 50 गुणा 30 मीटर आकार वाला एक बृहद स्मारकीय स्थापत्य अस्तित्व में है। उत्खनन के दौरान लगभग 50 स्तम्भ वाले ईंट निर्मित आधार के साक्ष्य मिले जिसके ऊपर बलुआ पत्थर से निर्माण किया गया। वर्तमान उत्खनन के पाए गए स्तम्भों के आधार पर यह विचार बनता है कि उत्तर-दक्षिण क्षेत्र में एक बृहदकार भित्ति (दीवार) का निर्माण किया गया था, जो मूल रूप से एक बड़े निर्माण से जुड़ी है और जिसका क्षेत्र लगभग 60 मीटर लम्बा है। वर्तमान में वह 50 मीटर उपलब्ध है।

विवादित ढांचे का केन्द्रीय कक्ष (मध्य हिस्सा) इसी दीवार के ठीक ऊपर गिरा। पर, इसके ठीक नीचे आगे उत्खनन इसलिये नहीं किया जा सकता क्योंकि इसी जगह पर अब रामलला का अस्थायी तौर पर मंदिर स्थित है। यह एरिया लगभग 15 गुणा 15 मीटर का उठा चबूतरा है। ❑

साक्ष्यों में मिले उत्तर भारतीय मंदिरों के लक्षण

इसका काल ईसा पूर्व 9 शताब्दी निर्धारित किया जा सकता है

काल निर्धारण अध्ययन के मुताबिक इस स्थल से प्राप्त पुरातात्विक सामान ईसा पूर्व तेरहवीं शताब्दी के मध्य के माने गए हैं। प्राकृतिक स्थल के ऊपर जो सबसे निचला निक्षेप है वह उत्तरी ओपदार (चमकदार) काले मृद (मिट्टी) भाण (बर्तन) का काल है। जिसकी अवधि 13वीं शताब्दी ईसा पूर्व है। इसके दो अन्य कार्बन डेट के आधार पर इसका काल ईसा पूर्व 9 शताब्दी निर्धारित किया जा सकता है। अन्य कुछ कार्बन डेट कराई गई। जिसके आधार पर इसका काल निश्चित रूप से 600 से 300 ईसा पूर्व माना जाता है। इससे पता चलता है कि 1300 ईसा पूर्व यहां मानवीय क्रिया कलाप संचालित हो रहे थे।

हाईकोर्ट ने यह जानने के लिये ही कि क्या कभी कोई मंदिर या ढांचा ध्वस्त करके मस्जिद बनाई गई थी, पर्याप्त पुरातात्विक साक्ष्य जुटाने के निर्देश दिए थे। अब सम्पूर्णता में देखते हुए और पुरातात्विक साक्ष्य को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि विवादित ढांचे के ठीक नीचे एक बृहद निर्माण कार्य किया गया। इस बात के भी साक्ष्य हैं कि दसवीं शताब्दी से लेकर विवादित ढांचे के निर्माण तक निरंतरता बनी रही जिसमें सजी हुई ईंटों के साक्ष्य मिले। देवी युग्म (मिथुन) की खंडित मूर्तियां मिली। उकेरी गई आकृतियां जैसे कि आम्लक, कलश, कपोत कली, अर्ध चंद्र, गोलाकार भित्ति, स्तम्भ, काली स्तरीय चट्टानों का बना हुआ अष्टकोणीय स्तम्भ दंड, कमल के चिह्न, चक्राकार मंदिर, जिनके बीच उत्तर में परनाला, नाली, बृहद निर्माण से जुड़े हुए 50 स्तम्भों की मौजूदगी के संकेत यह सब उत्तर भारतीय मंदिरों के प्रमुख लक्षण हैं। ❑

श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या को समझें

(गतांक से आगे)

विराट प्रदर्शन : 4 अप्रैल, 1991 को दिल्ली के वोट क्लब पर विशाल रैली हुई। देशभर से पच्चीस लाख रामभक्त दिल्ली पहुंचे। यह भारत के इतिहास की विशालतम रैली कहलाई। इस रैली की विशालता को देखकर वोट क्लब पर सभाएं करना ही प्रतिबंधित कर दिया गया। रैली में संतों की गर्जना हो रही थी तभी सूचना मिली कि उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। श्रीराम जन्मभूमि पर देश में जनादेश प्राप्त हो गया। उत्तर प्रदेश में पुन: चुनाव हुए। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण का विरोध करने वाले पराजित हुए। श्री कल्याण सिंह मुख्यमंत्री बने।

समतलीकरण : श्रीराम जन्मभूमि न्यास ने उत्तर प्रदेश सरकार से राम कथाकुंज के लिये भूमि की मांग की। मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह जी ने 42 एकड़ भूमि श्रीराम कथाकुंज के लिये राम जन्मभूमि न्यास को पट्टे पर दी। यह भूमि ढांचे के पूर्व व दक्षिण दिशा में थी।

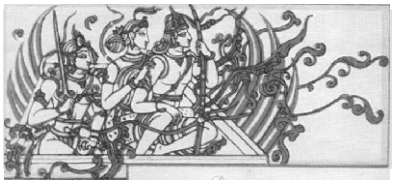

संविधान की प्रथम प्रति में प्रकाशित भगवान् श्रीराम का चित्र

उत्तर प्रदेश सरकार ने भी 2.77 एकड़ भूमि तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिये अधिग्रहण की। जून, 1991 में उत्तर प्रदेश सरकार जब इस उबड़-खाबड़ भूमि का समतलीकरण करा रही थी, तब ढांचे के दक्षिणी, पूर्वी कोने की जमीन से अनेक पत्थर प्राप्त हुए, जिनमें शिव पार्वती की खंडित मूर्ति, सूर्य के समान अर्ध कमल, मंदिर के शिखर का आमलक, उत्कृष्ट नक्काशी वाले पत्थर व अन्य मूर्तियां थी।

सर्वदेव अनुष्ठान व नीव ढलाई : 9 जुलाई, 1992 से 60 दिवसीय सर्वदेव अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ। जन्मभूमि के ठीक सामने शिलान्यास स्थल से भावी मंदिर की नींव के चबूतरे की ढलाई भी प्रारम्भ हुई। 15 दिनों तक ढलाई का काम चला। प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने संतों से कुछ समय मांगा और नींव ढलाई का काम बंद करने का निवेदन किया। संतों ने प्रधानमंत्री की बात मान ली और कुछ दूरी पर बनने वाले शेषावतार मंदिर की नींव के निर्माण के काम में लग गए। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर की जिस नींव की ढलाई हुई वह रॉफ्ट है। यह नींव 290 फीट लम्बी, 155 फीट चौड़ी और 2-2 फीट मोटी एक-के-ऊपर-एक तीन परत ढलाई करके कुल 6 फीट मोटी बनेगी।

पादुका पूजन : नंदीग्राम में भरत जी ने 14 वर्ष वनवासी रूप में रहकर अयोध्या का शासन भगवान की पादुकाओं के माध्यम से चलाया था, इसी स्थान पर 26 सितम्बर, 1992 को श्रीराम पादुकाओं का पूजन हुआ। अक्तूबर मास में देश के गांव-गांव में इन पादुकाओं के पूजन द्वारा जन जागरण हुआ। रामभक्तों ने मंदिर निर्माण का संकल्प लिया।

द्वितीय कारसेवा : दिल्ली में 30 अक्तूबर, 1992 को संत पुन: इकट्ठे हुए। यह पांचवीं धर्मसंसद थी। संतों ने फिर घोषणा की कि गीता जयंती (6 दिसम्बर, 1992) से कारसेवा पुन: प्रारम्भ करेंगे। संतों के आह्वान पर लाखों रामभक्त अयोध्या पहुंच गए। निर्धारित तिथि व समय पर रामभक्तों का रोष फूट पड़ा, जो ढांचे को समूल नष्ट करके ही शांत हुआ।

ढांचे से प्राप्त शिलालेख : 6 दिसम्बर, 1992 को जब ढांचा गिर रहा था तब उसकी दीवारों से शिलालेख प्राप्त हुआ। विशेषज्ञों ने पढ़कर बताया कि यह शिलालेख 1154ई. का संस्कृत में लिखा है, इसमें 20 पंक्तियां हैं। ॐ नम: शिवाय से यह शिलालेख प्रारम्भ होता है। विष्णुहरि के स्वर्ण कलशयुक्त मंदिर का इसमें वर्णन है। अयोध्या के सौंदर्य का वर्णन है। दशानन के मान-मर्दन करने वाले का वर्णन है। ये समस्त पुरातात्त्विक साक्ष्य उस स्थान पर कभी खड़े रहे भव्य एवं विशाल मंदिर के अस्तित्व को ही सिद्ध करते हैं।

संविधान निर्माताओं की दृष्टि में राम : भारतीयों के लिये तो राम आदर्श हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। संविधान निर्माताओं ने भी जब संविधान की प्रथम प्रति का प्रकाशन किया तब भारत की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक प्राचीनता को दर्शाया है। संविधान की इस प्रति में तीसरे नम्बर का चित्र प्रभु श्रीराम, माता जानकी व लक्ष्मण जी का उस समय का है, जब वे लंका विजय के पश्चात् पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या को वापिस आ रहे हैं। संविधान निर्मात्री सभा में सभी मत-मतांतरों के लोग थे, किसी ने आपत्ति नहीं उठाई। आखिर सबकी सहमति से ही वह चित्र छपा होगा। इसी संविधान में वैदिक काल के आश्रम (गुरुकुल), युद्ध के मैदान में विषादयुक्त अर्जुन को प्रेरणा देते हुए भगवान श्रीकृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी आदि भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ पूज्य पुरुषों के चित्र संविधान निर्माताओं ने रखे हैं। अत: ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के जन्मस्थान की रक्षा करना हमारा संवैधानिक दायित्व भी है। ❑ (क्रमश:)

आरोग्य मेला : ऊना ने रचा इतिहास

आयुर्वेद विभाग, हिमाचल प्रदेश ने आयुष विभाग भारत सरकार के सौजन्य से ऊना में 25 अक्तूबर से 27 अक्तूबर को आरोग्य मेले का आयोजन किया। तीन दिवसीय इस आरोग्य मेले का आयोजन ऊना के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में किया गया। 25 सितम्बर, 2010 को हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल के करकमलों द्वारा इस आरोग्य मेले का शुभारम्भ किया गया। हिमाचल प्रदेश के आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव बिंदल, मुख्य संसदीय सचिव व स्थानीय विधायक श्री सतपाल सत्ती, कुटलैहड़ विधानसभा के विधायक एवं मुख्य संसदीय सचिव वीरेंद्र कंवर, स्वास्थ्य एवं सचिव आयुर्वेद पी.सी. धीमान, पूर्व विधायक प्रवीण शर्मा, बलदेव बगा, अध्यक्ष जिला परिषद के अतिरिक्त स्थानीय जिलाधीश एवं पुलिस अधीक्षक सहित हजारों लोग इस अवसर पर मुख्य रूप से उपस्थित रहे। आयुर्वेद विभाग द्वारा जनसामान्य को स्वस्थ रहने के विषय में एवं विभिन्न रोगों से बचाव हेतु प्रकाशित पुस्तक 'स्वास्थ्य रहे- भारतीय दृष्टिकोण' का विमोचन भी इस अवसर पर किया गया।

इस विशाल मेले में नि:शुल्क चिकित्सा कैंप का आयोजन किया गया एवं काय चिकित्सा, जरा रोग, अस्थि रोग, गुदा रोग, हृदय रोग, पंचकर्म, स्त्री रोग के विशेषज्ञों के अतिरिक्त युनानी, होम्योपैथी, आमची, तिब्बती आदि चिकित्सकों ने विभिन्न रोगों से पीड़ित रोगियों की चिकित्सा की। तीन दिनें में 12000 से भी अधिक रोगियों का निरीक्षण एवं चिकित्सा करके ऊना में एक इतिहास रचा गया। इस चिकित्सा कैम्प में 14 लाख की औषधियां नि:शुल्क रोगियों में वितरित की गई। पपरोला स्थित राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज के चिकित्सकों के अतिरिक्त आयुर्वेद विभाग के विभिन्न विशेषज्ञ चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं दी।

(पृष्ठ 8 का शेष)

का हौवा खड़ा करने का उनका काम सदैव 'सेक्युलॅरिज्म' का चोला ओढ़कर, कुटिल तर्कदुष्टता से चलता रहता है। इन सभी से सदा ही सावधान रहने की आवश्यकता है। अपने स्वार्थ को साधने के लिए विश्वबंधुत्व, समता, शोषणमुक्ति आदि बड़ी-बड़ी बातों की आड़ में समाज में इन बातों को अवतीर्ण होने से इन्ही लोगों ने रोका है। ❑

आरोग्य मेले में विशेष रूप से बनाए गए दो विशाल पंडालों में भारत सरकार केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद्, केंद्रीय युनानी अनुसंधान परिषद्, केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक अनुसंधान परिषद्, केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद के अतिरिक्त मैडिसिनल प्लांट बोर्ड ने अपने-अपने स्टॉल लगाए एवं लोगों को लाभकारी जानकारी उपलब्ध करवाई एवं अन्य जनोपयोगी सामग्री भी वितरित की गई।

हिमाचल प्रदेश की 46 एवं पंजाब आदि से आए 32 संस्थानों जिनमें प्रसिद्ध आयुर्वेदिक औषध निर्माता, आयुर्वेदिक कॉलेज आदि ने अपनी प्रदर्शनियां लगाई। इस आरोग्य मेले में विद्यालय के सभागार में विभिन्न विषयों से सम्बंधित व्याख्यानों का भी आयोजन किया गया जिसमें आयुर्वेद, योग आदि से सम्बंधित विशेषज्ञों ने लोगों को उपयोगी जानकारी दी। आरोग्य मेले में आर्ट ऑफ लिविंग, मोरारजी देसाई केन्द्रीय योग परिषद्, सीटी आई फाउंडेशन आदि संस्थानों ने भी जनसामान्य को उपयोगी जानकारी दी। इस मेले में 500 के लगभग किसानों को औषधीय पौधों के विषय में भी जानकारी दी गई।

आयुर्वेद विभाग के समस्त कर्मचारियों ने इस आरोग्य मेले को सफल बनाने में कड़ी मेहनत की। आरोग्य मेले के सफल आयोजन के लिये विभाग के निदेशक श्री प्रेम सिंह दरेक ने सभी का धन्यवाद किया और तीन दिन में 12000 से अधिक रोगियों की चिकित्सा करके एक रिकॉर्ड बनाया। ❑

ठाकुर रामसिंह स्मृति ग्रंथ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं इतिहास संकलन समिति के संस्थापक सदस्य ठाकुर रामसिंह विगत 6 सितम्बर को शरीर छोड़कर ब्रह्मलीन हो गए हैं। संगठन द्वारा उनकी वीरव्रती जीवन-गाथा को एक ग्रंथ के रूप में संजोने का निश्चय किया गया है, जिसका कार्य पांचजन्य के स्तम्भ लेखक एवं संघ के पूर्व प्रचारक श्री नरेंद्र सहगल को सौंपा गया है। अत: स्वर्गीय रामसिंह जी के परिचित साथियों, कार्यकर्ताओं एवं स्वयंसेवकों से आग्रह है कि वे उनके संस्मरण, चित्र, लेख, महत्त्वपूर्ण पत्र इत्यादि निम्नलिखित पते पर यथाशीघ्र भेजें–

श्री नरेंद्र सहगल
22/5-सी, तृतीय तल, न्यू रोहतक रोड
करोल बाग, नई दिल्ली- 110055
दूरभाष : 098118 02320

निवेदक
सीताराम व्यास
क्षेत्र कार्यवाह
रा.स्व.संघ

हिमाचल शिक्षा समिति की वैबसाइट का शुभारम्भ

हिमाचल शिक्षा समिति (सम्बद्ध विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान) की वैबसाईट के द्वितीय चरण का शुभारम्भ मुख्यमंत्री प्रो. प्रेमकुमार धूमल द्वारा 13 अक्तूबर 2010 को सरस्वती विद्यामन्दिर हिम रश्मि परिसर, विकासनगर में किया गया।

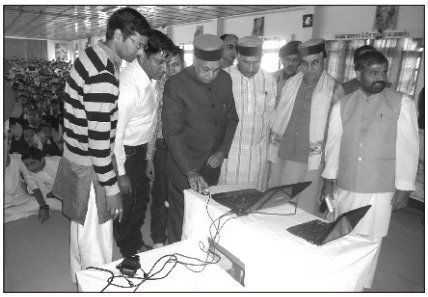

मुख्यमंत्री ने वैबसाईट के शुभारम्भ अवसर पर कहा कि पुराने समय में महीनों बाद समाचार मिलता था, कुछ अंतराल पश्चात पिछले दिन की जानकारी मिलनी आरम्भ हुई और आज सूचना प्रौद्यागिकी के युग में पल-पल में देश, दुनिया में क्या घट रहा है की जानकारियां मिल जाती हैं। उन्होंने हिमाचल शिक्षा समिति को इस अवसर पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि हमें चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहने के साथ-साथ समाज को भी जगाने की भी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हमारी विचारधारा के सम्बंध में भ्रान्तियां फैलाई जा रही हैं। सूचना तंत्र की खामोश क्रान्ति के माध्यम से उन भ्रान्तियों को दूर किया जा सकता है। सूचना तंत्र द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सही सूचना पहुंचा कर दुष्प्रचार का मुकाबला किया जाना चाहिए।

वैबसाईट के शुभारम्भ अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत कार्यवाह श्री चेतराम, विधायक श्री सुरेश भारद्वाज, हिमाचल शिक्षा समिति के महामंत्री गुलाब सिंह मेहता, संगठन मंत्री राजेन्द्र कुमार सहित अनेक गणमान्य महानुभावों, विद्यालय की प्रबन्धक समिति, आचार्यों व छात्रों ने भाग लिया।वेबसाईट के लिए **www.shikshasamiti.org** पर लॉग आन कर जानकारी प्राप्त की जा सकती है। ❑

विद्या भारती उत्तर क्षेत्रीय खेल-कूद प्रतियोगिता

विद्या भारती उतर क्षेत्र द्वारा आयोजित 23वें क्षेत्रीय खेल-कूद समारोह में सरस्वती विद्या मन्दिर, वरिष्ठ माध्यमिक आवासीय विद्यालय, हिम रश्मि परिसर विकासनगर, शिमला के भैया-बहनों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। विद्यालय के भैया-बहनों ने 12 स्वर्ण पदक, 8 रजत पदक व 18 कांस्य पदक प्राप्त किए हैं। भैया युवराज ने 800 मीटर तथा 3000 मीटर दौड़ में 2 स्वर्ण पदक झटके। आशीष ने 1500 मीटर, बहन स्मृति ने 200 मीटर, मोनिका ने 800 मीटर एवं वन्दना ने 3 कि.मी. क्रास कंटरी में स्वर्ण पदक जीते। विद्यालय के 7 पहलवानों ने 6 स्वर्ण पदक और एक ने रजत पदक प्राप्त किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने विद्यार्थियों के अच्छे प्रदर्शन के लिए बधाई दी है। ❑

उत्तर क्षेत्र खेल-कूद प्रतियोगिता में सरस्वती विद्या मंदिर कन्या उच्च पाठशाला विकासनगर की छात्राओं ने योग में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। विजेता टीम स्कूल की प्रधानाचार्या के साथ।

धर्मांतरण के बाद भी नहीं मिली सुविधाएं

गरीबी, भुखमरी और महंगाई के चलते देश में हिन्दू धर्म से धर्मांतरण की प्रक्रिया तेजी से चल रही है लेकिन धर्मांतरण के बावजूद उन्हें वे सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। दो साल पूर्व दासी देवी ने अपना धर्म परिवर्तन कर अन्य धर्म को अपनाया था, लेकिन इस महिला को फरमान जारी किया गया कि यदि उसे सुविधाएं चाहिये तो पहले वह अपना आईआरडीपी का प्रमाण पत्र लाए। इसी के चलते महिला नगर निगम शिमला की महापौर मधु सूद से मिलने आई तथा अपनी व्यथा सुनाई। महापौर मधु सूद ने कहा कि बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमारे यहां तेजी से धर्मांतरण हो रहा है। उनका कहना है कि कोई भी धर्म छोटा-बड़ा नहीं होता है लेकिन लोगों को झूठा झांसा देकर धर्म बदलवाना बेहद दुखद है। ❑ (**साभार :** पंजाब केसरी, तिथि 13 अक्तूबर)

हिमगिरी कल्याण आश्रम का रजत जयंती समारोह सम्पन्न

विगत दिनों हिमगिरी कल्याण आश्रम, हिमाचल प्रदेश का रजत जयंती समारोह आश्रम के सोलन (हि.प्र.) स्थित कार्यालय में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे गोरक्षापीठ, गोरखपुर के उत्तराधिकारी एवं सांसद योगी आदित्यनाथ, जबकि अध्यक्षता की राज्य के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री राजीव बिंदल ने। यहां कल्याण आश्रम के बालक-बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत किये गए अनेक प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, गीत, नृत्य आदि ने उपस्थितजनों का मन मोह लिया।

इस अवसर पर योगी आदित्यनाथ ने कल्याण आश्रम के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि वनवासी बंधुओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का जो महत्वपूर्ण कार्य हिमगिरी कल्याण आश्रम द्वारा पिछले 25 वर्षों से किया जा रहा है, वह उत्कृष्ट है। इस कार्य को और गति प्रदान करने की आवश्यकता है। श्री राजीव बिंदल ने कहा कि हिमगिरी कल्याण आश्रम का जो स्वरूप आज हम देख रहे हैं, वह हमेशा से ऐसा नहीं था। इसको इस स्थान तक पहुंचाने में आश्रम के कार्यकर्ताओं ने अथाह परिश्रम किये हैं। रजत जयंती के इस उल्लास भरे समारोह में कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं सहित बड़ी संख्या में स्थानीय गण्यमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।

नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

हिमगिरि कल्याण आश्रम जिला लाहौल-स्पिति समिति द्वारा भाद्रपद एकादशी व द्वादशी को दो दिवसीय पैल्टन वैली उदयपुर खड के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। उद्घाटन सरस्वती स्कूल के बच्चों द्वारा भारत माता गीत का गायन से किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. रामलाल मारकंडे स्थानीय विधायक, विशिष्ट अतिथि शमशेर सिंह, अतुल खंडेलवाल थे। अध्यक्षता अमर सिंह ने की। शमशेर सिंह जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी, श्री मोहन जी, श्री देवी सिंह, श्री श्रवण व छेरिंग द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का शुभारम्भ किया गया।

इस शिविर में 1290 मरीजों ने स्वास्थ्य जांच करवाई तथा नि:शुल्क दवाईयां वितरित की गई। आईजीएमसी शिमला से विशेषज्ञों की टीम में डॉ. भूषण लाल जी, डॉ. अतुल भारद्वाज नाक, कान, गला के विशेषज्ञ आंखों के डॉ. शशि दत्त शर्मा, महिला विशेषज्ञ डॉ. श्रीमती रीता मित्तल, डॉ. अनु डग्यां, बच्चों के डा. संजय महाजन व मेडिसन में डॉ. अरविंद सूद तथा रेडियोलॉजिक्ट विशेषज्ञ डारु सुशील पुंडिर तथा जिला व स्थानीय डॉक्टरों का भी सहयोग रहा। ❑

सेवा भारती के शिविर में 106 ने किया रक्तदान

सेवा भारती बद्दी ने 18 अक्तूबर को मल्होत्रा अस्पताल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जिसमें सौ से ज्यादा लोगों ने रक्तदान किया। इस शिविर में चंडीगढ़ पीजीआई की ब्लड बैंक की टीम ने रक्त एकत्रित किया। इस शिविर में सेवा भारती के सदस्यों के अलावा एलिन एपलैंसिस, प्रेस क्लब, पुलिस विभाग व कई उद्योगों के कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

पीजीआई चंडीगढ़ ब्लड बैंक टीम की प्रमुख डॉ. उषा राव ने बताया कि 18 साल से साठ साल तक का कोई भी स्वस्थ व्यक्ति तीन माह में रक्तदान कर सकता है। उन्होंने कहा कि इस रक्त की पूर्ति खून देने के 24 घंटे के भीतर हो जाती है इसलिये इस बारे में कोई भ्रांति नहीं रखनी चाहिये।

सेवा भारती की बद्दी इकाई के प्रधान जगदीप अरोड़ा व कोषाध्यक्ष किशोर ठाकुर ने बताया कि यह अमूल्य रक्त सड़कों और नालियों की बजाए मानव की रगों में बहना चाहिये। उन्होंने कहा कि चूंकि खून का कोई विकल्प नहीं है इसलिये यह खून चाहे देश की सेवा में जुटा घायल जवान हो या हादसे में घायल कोई आदमी सभी के काम आता है। उन्होंने कहा कि सेवा भारती

बद्दी समय समय पर ऐसे शिविरों का आयोजन कर इस पुनीत कार्य में सबका सहयोग लेती है। इस अवसर पर संघ के जिला संघचालक हरिराम धीमान, जगदीप सिंह, विक्रम बिंदल, महेश कौशल, किशोर, पंकज गुप्ता, राकेश, डॉ. मुकेश मल्होत्रा आदि अन्य गणमान्य लोगों ने रक्तदान किया। ❑

गुरु तेगबहादुर

❑ सरदार सुरेंद्र सिंह मजीठिया

आप छठे गुरु हरगोविन्द के पुत्र थे। माता थीं नानकी देवी। वैशाख कृ.5, सं. 1679 वि. को अमृतसर में प्रकट हुए। छठे गुरु के पांच पुत्र थे– गुरुदित्ता सूरजभान, अनीराम, बाबा अटल और तेगबहादुर। इनमें से गुरुदित्ता के छोटे पुत्र हरराय सातवें गुरु हुए। आठवें गुरु हुए हरराय के छोटे पुत्र हरकृष्ण राय। इनका देहावसान 8 वर्ष की अवस्था में हो गया। उसके बाद सिक्खों ने तेगबहादुर जी को ही गुरु गद्दी दी।

गुरु तेगबहादुर पांच वर्ष की आयु से ही एकांतप्रिय थे। बहुत कम बोलते थे। इनकी साधुता देखकर इनके पिता ने भविष्यवाणी की थी कि ये गुरु बनेंगे।

बादशाह औरंगजेब बलपूर्वक धर्मपरिवर्तन कराने पर तुला था। उसने कश्मीर के ब्राह्मणों को सूबेदार शेर अफगान के द्वारा कहलवाया कि वे सब या तो मुसलमान हो जाएं अथवा मरने को तैयार रहें। व्याकुल होकर उन ब्राह्मणों ने अपने प्रतिनिधि गुरु तेगबहादुर के पास भेजा, क्योंकि एकमात्र वे ही इस विपत्ति में रक्षा करने योग्य उन्हें जान पड़े। ब्राह्मणों की विपत्ति कथा सुनकर गुरु तेगबहादुर ने धर्म रक्षा के लिये आत्माहुति देने का निश्चय कर लिया। उनकी सलाह के अनुसार ब्राह्मणों ने बादशाह के पास संदेश दिया– 'गुरु नानक के तख्तपर आसीन गुरु तेगबहादुर को पहले आप मुसलमान बना लें तो खुशी से वे इस्लाम कबूल कर लेंगे।'

बादशाह ने तुरंत कुछ अधिकारी गुरु तेगबहादुर को दिल्ली लाने के लिये भेजे। गुरु ने उन लोगों से कह दिया– 'वर्षा के बाद मैं स्वयं दिल्ली आऊंगा।' इस प्रकार अधिकारियों को उन्होंने लौटा दिया, किन्तु स्वयं दिल्ली की ओर चल पड़े। मार्ग में अपने मित्र सैफुद्दीन से मिले। सैफुद्दीन ने सिक्ख धर्म स्वीकार कर लिया। गुरु वहां तीन महीने रुके रहे। इसी प्रकार मार्ग में कई स्थानों पर ठहरते, धर्मप्रचार करते दिल्ली पहुंचे। वहां पहुंचते ही बादशाह ने उन्हें गिरफ्तार करवा दिया।

गुरु तेगबहादुर के सामने जब बादशाह औरंगजेब ने इस्लाम कबूल करने का प्रस्ताव रखा, तब आप बोले– 'अगर दुनिया में एक ही मजहब चलाना खुदा को मंजूर होता तो कई मजहब एक साथ चल कैसे सकते थे। उस मालिक की मर्जी के खिलाफ न मैं कुछ कर सकता हूं, न तुम। मैं अपना धर्म कभी नहीं छोडूंगा। परमात्मा से डरो और जुल्म करना बंद करो।'

बादशाह गुस्से से लाल हो गया। गुरु को बहुत-से प्रलोभन दिये गए। तरह-तरह से डराया और सताया गया। किंतु वे पर्वत के समान अटल रहे। अंत में उन्हें लोहे के पिंजड़े में बंद कर दिया गया।

मार्गशीर्ष शु. 5, सं. 1732 वि. का दिन था। गुरु को पिंजड़े से निकाला गया। उन्होंने स्नान करके एक वटवृक्ष के नीचे 'जपुजी' का पाठ किया और ध्यानस्थ हो गए। उसी अवस्था में सैयद आदमशाह ने उनका सिर धड़ से पृथक् कर दिया। धर्मरक्षा के लिये एक महत्तम बलिदान हो गया।

गुरु तेगबहादुर के सामने जब बादशाह औरंगजेब ने इस्लाम कबूल करने का प्रस्ताव रखा, तब आप बोले– 'अगर दुनिया में एक ही मजहब चलाना खुदा को मंजूर होता तो कई मजहब एक साथ चल कैसे सकते थे। उस मालिक की मर्जी के खिलाफ न मैं कुछ कर सकता हूं, न तुम।

गुरु तेगबहादुर का कहना था कि जीव का दु:ख हरिनाम के बिना नहीं मिटता। वह दूसरा कोई भी उपाय कर ले, कोई लाभ नहीं होता।

हरि के नाम बिना दुखु पावै।
भगति बिना सहसा नहिं चूके गुर इह भेद बतावै।।
कहा भइउ तीरथ व्रत कीए, राम सरन नहिं आवै।
जोग-जग्य निहफल तिह मानौ, जो प्रभु जसु बिसरावै।।
मान-मोह दोनों को परिहरि गोविंद के गुन गावै।
कहु नानक इस विधि को प्रानी जीवन मुकुत कहावै।। ❑

साभार : 'कल्याण'

जजों के खिलाफ हो सकेगी शिकायत

न्यायपालिका में जड़ जमाते भ्रष्टाचार की खबरों से चिंतित केन्द्र सरकार ने ज्यादा जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के प्रयास तेज कर दिये हैं। इसी के तहत कैबिनेट ने न्यायिक मानक और जवाबदेही विधेयक 2010 को हरी झंडी दिखा दी है। इसमें सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के जजों के खिलाफ शिकायतों की जांच के लिये तंत्र विकसित करने के अलावा उनकी सम्पत्तियों और देनदारियों को सार्वजनिक करने का प्रावधान भी है।

न्यायाधीश (जांच) अधिनियम 1968 का स्थान लेने वाले इस विधेयक को संसद के आगामी सत्र में पेश किया जाएगा। कानून बनने के बाद सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के जजों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराना, जांच प्रक्रिया शुरू करना और दोषी पाए जाने पर उनकी बर्खास्तगी तक का रास्ता खुल जाएगा।

केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अंबिका सोनी के अनुसार, लम्बे समय से न्यायपालिका की स्वायत्तता बरकरार रखते हुए उसे अधिक जवाबदेह बनाने की जरूरत महसूस की जा रही थी। इस विधेयक के प्रावधानों के जरिये पूरी प्रणाली को पारदर्शी बनाने की कोशिश की गई है। प्रस्तावित तंत्र के तहत सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के जजों के खिलाफ शिकायतों की जांच के लिये पांच सदस्यीय ओवरसाइट कमेटी का गठन होगा जिसकी अध्यक्षता सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश करेंगे। अन्य सदस्यों में एक सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश और एक हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश होंगे जिन्हें मनोनीत करने का अधिकार कमेटी के अध्यक्ष का होगा। अवकाशप्राप्त अटॉर्नी जनरल के अलावा चौथे सदस्य का मनोनयन राष्ट्रपति के मार्फत किया जाएगा। अंबिका ने न्यायपालिका पर फैसला थोपने जैसे सवालों से इनकार करते हुए कहा कि उसे बाकायदा भरोसे में लेकर बिल तैयार किया गया है। ओवरसाइट कमेटी के पास शिकायतें सीधे न आकर सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट दोनों स्तर पर गठित तीन सदस्यीये जांच समितियों के माध्यम से आएंगी। पैनल के तीन सदस्यों में एक सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश होंगे। ❑

भारत से होड़ गुजरे जमाने की बात : चीन

चीन ने अपने पड़ोसी देश भारत के साथ होड़ को गुजरे जमाने की बात और पश्चिमी जगत की बुनी भू राजनीतिक अवधारणा बताया है। चीन ने कहा है कि दोनों देशों के आगे बढ़ने के लिये दुनिया में पर्याप्त जगह है। बीजिंग ने यह भी मान लिया है कि कुछ द्विपक्षीय मुद्दे हैं जिनका समाधान होना है। दोनों देशों के बीच मतभेदों की चिंगारी भड़काने का दोष पश्चिमी देशों और मीडिया एजेंसियों के सिर मढ़ते हुए सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के 'पीपुल्स डेली' पत्र के वैचारिक पृष्ठ पर एक आलेख में कहा गया है कि ड्रेगन और हाथी बताकर तकरार और होड़ की बजाए आपसी सहयोग ज्यादा तार्किक विकल्प है। ❑

...ताकि यह चौपाल कहती रहे गौरवगाथा

गैरवाजिब लगान न देने का साहसकि फैसला सर्वप्रथम हरियाणा के दूसरे सबसे बड़े गांव बालू में हुआ था। करीब 300 वर्ष पूर्व यहां के ग्रामीणों के स्वाभिमानों के समक्ष पटियाला रियासत के तत्कालीन राजा को झुकना पड़ा था। वह ऐतिहासिक चौपाल यहां आज भी है जहां राजा ने गांव पर हमला करने के लिए माफी मांगी थी। लेकिन अब यह खंडहर में तबदील हो रहा है। वर्तमान सरकार ने इस गांव को आदर्श गांव घोषित किया है, लेकिन इस ऐतिहासिक गौरव की ओर किसी का ध्यान नहीं है। अब देखना है इसे बचाने कौन आगे आता है ताकि यह चौपाल गौरव की गाथा कहती रहे। इस चौपाल की भित्ति आज भी प्राचीन कलाकृति को जीवंत रखे हुए हैं। इन पर प्राकृतिक रंगों से मानवीय व पेड़-पौधों की आकृतियों को बखूबी उकेरा गया है। इससे पता चलता है कि उस समय में लोग पर्यावरण संरक्षण के प्रति कितने संजीदा थे।

26 अक्तूबर 2006 को हरियाणा सरकार द्वारा बालू को आदर्श गांव घोषित किया गया था। इसके बाद विभिन्न निर्माण कार्यों पर करोड़ों रुपये व्यय किये गए। इस चौपाल की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। यहां के बुजुर्ग शिवचरण, कर्म सिंह सहित अन्य ग्रामीणों ने बताया कि पटियाला रियासत का हिस्सा रहे गांव के लोगों द्वारा लगान देने से इनकार करने पर राजा ने यहां चढ़ाई कर दी थी। ❑

क्या अब कभी नहीं लौटेंगे वे?

39 साल से अपनों की वतन वापसी का इंतजार कर रहे भारतीय युद्धबंदियों के परिजनों की उम्मीदें अब बुझने लगी है। उन्हें पाकिस्तान की जेलों में बंद अपने प्रियजनों के लौटने की कोई उम्मीद नजर नहीं आती। बंग्लादेश की आजादी के लिये 1971 में हुए युद्ध में भारत ने जहां पाकिस्तान के 90 हजार से अधिक युद्धबंदियों को छोड़ा था, वहीं पाकिस्तान ने 56 भारतीय युद्धबंदियों को अब तक नहीं छोड़ा है।

इन्हें मुक्त कराने की बहुत कोशिशें हुई, लेकिन हर बार असफलता मिली। 28 मई 2007 को पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ ने भारतीय युद्धबंदियों के परिजनों को उनसे मिलने के लिये पाकिस्तान बुलाया था, लेकिन वहां उन्हें जेलों के भीतर नहीं घुसने दिया गया। 14 जून 2007 को ये लोग निराश होकर लौट आए।

मिसिंग डिफेंस पर्सनल रिलेटिव एसोसिएशन का दावा है कि 1971 की लड़ाई में लापता 56 भारतीय सैनिक अब भी पाकिस्तान की जेलों में हैं, जिनमें से कई सुध-बुध खो चुके हैं। एसोसिएशन के पास सबूत के तौर पर अमेरिकी एयरफोर्स के जनरल चुक ईगर की आत्मकथा, पाकिस्तानी अखबारों की कतरनें और 1989 में इस्लामाबद में दक्षेस बैठक में सामने आई वह स्वीकारोक्ति भी है जिसमें पाकिस्तान ने 40 भारतीय युद्धबंदियों के अपने यहां होने की बात स्वीकार की थी। इन युद्धबंदियों में से एक मेजर ए.के. सूरी तो पाकिस्तान की जेल से किसी तरह अपने परिवार को पत्र लिखने में भी सफल हो गए थे।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट सुधीर गोस्वामी के परिवार का भी दावा है कि उनका लाडला आज भी पाकिस्तान में बंद है। फ्लाइट लेफ्टिनेंट विजय बसंत तांबे, फ्लाइट लेफ्टिनेंट आरएम आडवाणी, फ्लाइट लेफ्टिनेंट एम. पुरोहित और स्क्वाड्रन लीडर महिंदर कुमार, इन सबके परिवारों के पास ऐसे सबूत हैं जिनसे साबित होता है कि इनके अपने पाकिस्तान में ही कैद हैं। ❑

राष्ट्रमण्डल खेलों का सफल आयोजन

कॉमन वैल्थ गेम्ज में कॉमन वैल्थ अर्थात् आम जनता के पैसों का जिस बेदर्दी से दुरुपयोग किया गया है और मीडिया ने खेलों के आयोजन की पूर्व तैयारी पर जिस प्रकार धांधलियों और लापरवाहियों को उजागर किया है उसकी अवश्य जांच की जानी चाहिये। राष्ट्रमंडल खेलों से पूर्व जो भारत की साख विश्व के सामने गिरती नजर आ रही थी। वही साख खेलों के सफल आयोजन और खिलाड़ियों द्वारा शताधिक पदक जीतने से खूब बढ़ती नजर आई। पहली बार सौ से अधिक पदक जीतकर भारतीय खिलाड़ियों ने देश का नाम ऊंचा किया है। इन खिलाड़ियों की उपलब्धियां एशियन और ओलम्पिक खेलों के लिये मील का पत्थर साबित होंगी। हमीरपुर के शूटर विजय कुमार ने तीन स्वर्ण और एक रजत पदक जीतकर देश और प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। समरेश जंग और मीना डोगरा ने भी शूटिंग में पदक जीतकर प्रदेश का मान बढ़ाया है। ❑

- डॉ. दयानन्द शर्मा

उत्तराखंड में दुनिया का पहला हिमनद प्राधिकरण

उत्तराखंड में सरकार द्वारा पहली बार हिमनदों और हिमशिलाओं के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए दुनिया का पहला हिमनद प्राधिकरण बनाने का फैसला किया है। हिमनदों को सिकुड़ने से रोकने, उनके संरक्षण और संवर्द्धन के लिये इस प्राधिकरण का गठन राज्य के विज्ञान और प्रोद्यौगिकी मंत्रालय के अन्तर्गत किया जाएगा। इस प्राधिकरण में विभिन्न विभागों के कुल 21 सदस्य शामिल किये जाएंगे। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री इसके पदेन अध्यक्ष होंगे तथा राज्य के मुख्य सचिव इसके उपाध्यक्ष होंगे। कुल 21 सदस्य चार गैर सरकारी संगठनों से होंगे। इस हिमनद प्राधिकरण में केन्द्र सरकार के भी प्रतिनिधि शामिल किये जाएंगे। उत्तराखंड के अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र को इसकी नोडल एजेंसी बनाया जाएगा, क्योंकि अधिकांश कार्य सेटेलाइट के माध्यम से ही किया जाएगा। इस प्राधिकरण की नियमावली तैयार की जा रही है। एक वर्ष में कम से कम इसकी तीन बैठकें आयोजित की जाएंगी। अधिकारिक सूत्रों ने बताया कि राज्य में पर्यावरण की दृष्टि से कई महत्त्वपूर्ण हिमनदों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिये राज्य के दस बड़े तथा करीब 1400 छोटे हिमनदों को प्रस्तावित प्राधिकरण में शामिल किये जाने की योजना है। ❑

घूमती कलम

कश्मीर की असहाय स्थिति

❑ सुभाष चंद्र सूद

भारत का नंदन वन जम्मू कश्मीर आज अवसरवादी नेताओं, पाकिस्तान परस्त अलगाववादी हुर्रियत नेताओं एवं यूपीए की केन्द्रीय सरकार की नपुंसक दिशाहीन नीतियों के कारण घोर असुरक्षा एवं अस्थिरता के दौर से गुजर रहा है। अपनी शासकीय विफलताओं पर पर्दा डालने हेतु सुरक्षा सैनिकों को बलि का बकरा बनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला का विधानसभा में हालिया बयान कि जम्मू कश्मीर का भारत में विलय अस्थाई एवं हैदराबाद, जूनागढ़ की तरह नहीं हुआ है अलगाव परस्तों की भाषा में दिया बयान सभी राष्ट्रभक्त शक्तियों के लिये चौंका देने वाला बयान है। सबसे अधिक चिंता तो उस मानसिकता की है जब इस वक्तव्य का विरोध वहां के भाजपा एवं पैंथर्स पार्टी विधायकों ने किया तो मार्शल द्वारा उन्हें लहूलुहान करते हुए बलपूर्वक सदन से बाहर कर दिया गया। इस सारी स्थिति को केन्द्र की गूंगी एवं बहरी यूपीए सरकार मूकदर्शक बनकर देख रही है। ध्यान रहे प्रदेश में भी नेशनल कांफ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन सरकार चल रही है। होना तो यह चाहिये था कि उमर अब्दुल्ला के इस राष्ट्रविरोधी असंवैधानिक वक्तव्य पर उन्हें बर्खास्त कर दिया जाता।

उधर लंदन में एक प्रेस इंटरव्यू में पूर्व सैनिक जनरल मुशर्रफ ने कारगिल युद्ध में पाक सेना की मिलीभगत की नापाक करतूत को स्वीकार करते हुए कश्मीर में पाकिस्तान के दीर्घकालीन हितों की वकालत की है। अपनी नासमझी एवं राजनीतिक अदूरदर्शिता से हम जम्मू कश्मीर का राजनीतिक अस्थिरीकरण एवं अंतर्राष्ट्रीकरण कर रहे हैं। सारी समस्या 1948 में पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा जम्मू कश्मीर मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने एवं प्रदेश सत्ता के सारे सूत्र शेख अब्दुल्ला परिवार को दिये जाने से शुरू हुई है। यही गलती दुबारा उनकी पुत्री इंदिरा गांधी ने 1972 में की जब बंगलादेश युद्ध में पकड़े गए 92,000 सैनिकों को बिना शर्त छोड़कर सत्ता के सूत्र पुनः शेख अब्दुल्ला परिवार को सौंप दिये गए तथा जुल्फीकार अली भुट्टो से गुपचुप शिमला समझौता कर लिया गया। हमने कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान से चार युद्ध लड़कर अपने सैनिकों के बहुमूल्य जीवन एवं सैन्य साधनों पर अरबों रुपये खर्च कर वर्तमान स्थिति प्राप्त की है। डर है कहीं अपनी अक्षमता एवं राजनीतिक अदूरदर्शिता से हम इस स्थिति को कहीं खो न दें। ❑

With Best Compliments from

HYUNDAI

Shivansh Hyundai

(Shivansh Motors Pvt. Ltd.)

NH-21, Gutkar, Mandi
(H.P.)- 175021

Tel.: 01905-221060, 221151
Fax: 01905-221160

E-mail: md@shivanshyundai.com

दीनदयाल थॉट में डिप्लोमा शुरू

आर्थिक चिंतन के क्षेत्र में रूचि रखने वाले युवाओं को अब 'दीनदयाल उपाध्याय थॉट' विषय में पोस्ट ग्रजेएट डिप्लोमा करने का मौका मिलेगा। इसके लिए एच.पी.यूनिवर्सिटी की दीनदयाल उपाध्याय पीठ इसी सत्र से इस विषय में डिप्लोमा कोर्स शुरू करने जा रही है। यूनिवर्सिटी में दीनदयाल उपाध्याय के जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो.एस.के. गुप्ता ने इसकी घोषणा की।

इस मौके पर मुख्य वक्ता और धर्मशाला स्थित क्षेत्रीय केन्द्र के निदेशक डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय राम मनोहर लोहीया के साथ मिलकर देश की राष्ट्रवादी शक्तियों का एक मंच तैयार करना चाहते थे। परन्तु इसे देश का दुर्भाग्य की कहना चाहिए कि जनसंघ के केरल अधिवेशन के बाद उनकी भी मुगल सराय के पास हत्या कर दी गई। दीनदयाल जी ने राष्ट्रवादी शक्तियों के लिए जो आधार भूमी तैयार कर दी थी उसी का सुफल था कि बीसवीं शताब्दी के अंत तक राष्ट्रवादी शक्तियां देश की राजनिति की धुरी में स्थापित हो गई। उन्होंने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद की अवधारणा स्थापित की। यह अवधारणा भारत के युगयुगीन सांस्कृतिक चिन्तन पर आधारित है।

इस मौके पर दीनदयाल उपाध्याय पीठ के चेयरमैन डॉ. सुदेश कुमार गर्ग ने कहा कि आज जब भोगवादी विकास के मॉडल के सिद्धांतों से मानव का सुख-चैन खो रहा है तब उपाध्याय की एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता ओर भी बढ़ गई है। ❑

राष्ट्रमंडल खेलों में विजय का विजय अभियान

सेना में कार्यरत हमीरपुर के विजय कुमार ने दिल्ली राष्ट्रमंडल खेलों में देश का तिरंगा कई बार सबसे ऊपर उठाकर भारत की राष्ट्रीय धुन संसार को बार-बार सुनाकर यह सिद्ध कर दिया है कि हिमाचली युवाओं की सुविधा मिले, तो वे आसमां के उस पार जाकर भी देश का गौरव बढ़ा सकते हैं। हिमाचल के एक बेटे समरेश जंग ने पिछली राष्ट्रमंडल खेलों में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का ताज पहनकर देश तथा प्रदेश को विश्व में श्रेष्ठता दिलाई थी। हमीरपुर के एक छोटे से गांव हरसौर से निकल कर सेना के वैपनों तथा बारूद के सहारे विजय कुमार एशियाई तथा राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतकर देश को कई बार सम्मान दिला चुका है। शूटिंग एक महंगा खेल है, इसका खिलाड़ी बिंद्रा की तरह किसी करोड़पति का बेटा हो सकता है या सेना तथा सुरक्षाबलों का सिपाही, जिसे लाखों करोड़ों रुपये के वैपन तथा ट्रेनिंग के लिये कारतूस बिना मांगे ही मिल जाते हैं। संसार के निर्धन देश तथा निर्धन खिलाड़ी शूटिंग के बारे में सोच भी नहीं सकते हैं। देश के अधिकांश शूटर सेना तथा सुरक्षाबलों की सहायता से आज विश्व में तिरंगे को सबसे ऊपर लहरा रहे हैं। विजय कुमार को तराशने में भी सेना के महू ट्रेनिंग सेंटर की भूमिका सबके सामने है। हिमाचल में शूटिंग के अभ्यास का कोई भी साधन नहीं है। हिमाचल में अभी तक कोई भी स्तरीय शूटिंग रेंज नहीं बन पाई है। यह अलग बात है कि हिमाचल की संतानें पिछले तीन दशकों से भारतीय शूटिंग में एक नाम है। ऊना के मोहिंदर लाल जो सुरक्षाबल से एक उच्च अधिकारी होकर आज सेवानिवृत्त हैं, दो दशक पूर्व शूटिंग में हिमाचल के पहले अर्जुन अवार्डी हैं।

पिछले एक दशक से समरेश जंग, अनुजा जंग, सोनिया राणा, विजय कुमार तथा मीना जैसे कई शूटर राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा पूरे संसार में मनवा चुके हैं, मगर हिमाचल में अगर वे छुट्टी बिताने भी आ जाते, तो उनकी ट्रेनिंग के लिये यहां कोई भी प्रबंध नहीं है। इस महंगे खेल के लिये हिमाचल के पास न तो शूटिंग रेंज है और न ही कारतूस तथा वैपन है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने पर हिमाचल इन खिलाड़ियों को नकद ईनाम जरूर दे देता है, मगर पिछले एशियाई खेलों में जीते पदकों का नकद ईनाम महीनों तक नहीं मिल पाया था।

इस बार विजय कुमार के पदक जीतने पर पिछली बार के मुकाबले नकद ईनाम को दोगुना कर 35 लाख रुपये देने की घोषणा मुख्यमंत्री कर चुके हैं। पिछली बार यह ईनाम स्वर्ण पदक जीतने पर पांच लाख था, यह अब दास लाख कर दिया गया है। विजय कुमार से अपेक्षा रखते हैं कि वह 2012 में होने वाले लंदन ओलम्पिक में तिरंगे को सबसे ऊपर उठाकर राष्ट्रीय धुन संसार को सुनाएं। ❑

(-लेखक पेनल्टी कॉर्नर खेल पत्रिका के सम्पादक हैं)

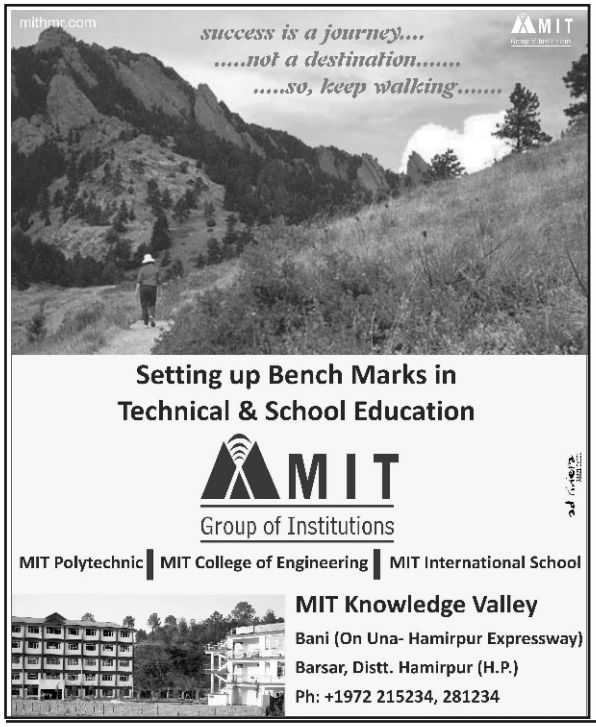

स्पष्टीकरण

विगत अंक में असावधानीवश महर्षि वाल्मीकि के एक पक्षीय जीवन चरित्र का ही वर्णन किया गया था। इसका उद्देश्य कदापि किसी वर्ग विशेष की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं था। इस लेख से यदि कतिपय पाठकों की भावनाएं आहत हुई हों तो उसके लिये हम खेद प्रकट करते हैं। आगे ऐसे विषयों पर पूर्ण ध्यान रखा जाएगा।

- सम्पादक

अर्जुन बनेंगे एकलव्य

भ्रष्ट और संवेदनहीन सरकारी तंत्र सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देता तो इसलिये भी कि उनके बच्चे वहां नहीं पढ़ते। पर अधिकारी संवेदनशील हों तो इन स्कूलों की फिक्र करते हैं। कानपुर में कुल 385 सरकारी स्कूलों के करीब 30,000 बच्चों की किस्मत निजी सहयोग से बदलने की एक अधिकारी की पहल रंग ला रही है।

तिजलाधिकारी मुकेश मेश्राम ने बीती जुलाई से इसी वास्ते वस्तुदान, विद्यादान और आरोग्य दान योजनाएं शुरू की हैं। वस्तुदान के तहत शहर के रईस लोग, संस्थाएं और समाजसेवियों से बच्चों की जरूरी सामग्री की किट्स ली जाती हैं जिसमें एक बच्चे की किट 300 रुपये की पड़ती है। एक किट में बचचे के स्कूल यूनिफॉर्म, बैग, जूते-मोजे, नोट बुक्स, क्रेयान कलर, पेंसिल, कटर आदि होते हैं। मेश्राम बताते हैं, 'अब तक 12000 से ज्यादा किट्स मिल चुकी हैं और वितरित की जा रही हैं। अनेक लोग दान की पेशकश कर रहे हैं।' लेकिन जाहिर है कि सिर्फ सामग्री से बच्चों का भला नहीं होने वाला। इसलिये अगला कदम था विद्या दान का। असल में बहुतेरी गृहिणियां अच्छी-खासी पढ़ी-लिखी होने के बावजूद घरों में कैद होकर रह जाती हैं। इसलिये शहर के लोगों से जब गरीब बच्चों को पढ़ाने के वास्ते कुछ वक्त निकालने की अपील की गई तो गृहणियों, रिटायर्ड लोगों, अनेक सेवारत लोगों और बहुतेरे सरकारी अधिकारियों तक ने इसे हाथोहाथ लिया और अब तक 500 से ज्यादा लोग इन स्कूलों में पढ़ा रहे हैं। अधिकारी ठीक नीयत से ऐसी पहल करें तो समाज साथ खड़ा होता है।

भ्रष्ट और संवेदनहीन सरकारी तंत्र सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देता तो इसलिये भी कि उनके बच्चे वहां नहीं पढ़ते। पर अधिकारी संवेदनशील हों तो इन स्कूलों की फिक्र करते हैं।

इस अभियान की अगली कड़ी है आरोग्य दान जिसके तहत शहर के करीब 2,000 डॉक्टरों में से हरेक को एक-एक स्कूल गोद दिया जा रहा है। इन डॉक्टरों से बच्चों के स्वास्थ्य का चेकअप और जरूरी उपचार कराया जा रहा है। बच्चों को एक आरोग्य कार्ड देने की भी योजना है जिसमें उनकी सेहत से जुड़े सभी तथ्यों का ब्यौरा होगा। साथ ही हनरेक प्राथमिक स्कूल में 3000 रुपये और जूनियर हाईस्कूल में 7000 रुपये खर्च करके एक-एक पुस्तकालय भी बनाएस जा रहे हैं। ऐसी योजनाएं तो पहले से हैं पर शायद पुस्तकों का पैसा भी अधिकारी हड़प जाते हैं और पुस्तकालय कागजों पर ही रह जाते हैं जो भी हो, यह अभियान बताता है कि अधिकारी संवेदनशील हों तो सरकारी स्कूलों के बच्चे भी शान से पढ़ सकते हैं। ❑ (साभार : इंडिया टुडे)

एक शख्स वर्षों से कर रहा है परायों का पिंडदान

मोक्षधाम के रूप में चर्चित बिहार के गया जिले में इन दिनों जारी पितृपक्ष मेले में देश-विदेश से आए लोग अपने पितरों की आत्मा की शांति और उन्हें मोक्ष दिलाने के लिये पिंडदान, श्राद्ध और तर्पण कर रहे हैं, लेकिन इन सबके बीच एक ऐसा व्यक्ति भी है, जो कई सालों से परायों के पितरों को मोक्ष दिलाने के लिये पिंडदान कर रहा है। भगवान विष्णु की तपोस्थली और भगवान बुद्ध की ज्ञानस्थली बिहार के गया जिले में इन दिनों पितृपक्ष मेला जारी है। सुरेश नारायण ने इस बार भी जगत्गुरु स्वामी राघवाचार्य महाराज के निर्देशन में फल्गू नदी के तट पर स्थित देव घाट के प्रांगण में पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री ज्योति बसु, आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वाई एस आर रेड्डी, लेह में बादल फटने से मारे गए लोगों, पाकिस्तान एवं चीन सहित विश्व के अन्य भागों में आई बाढ़ में मरने वाले लोगों, बिहार के लखीसराय जिले में नक्सली मुठभेड़ में शहीद हुए पुलिसकर्मियों सहित देश में आतंकी हमले में शहीद हुए सैनिक एवं आम नागरिक, डेंगू एवं स्वाइन फ्लू से मरने वाले लोगों तथा सूरजकुंड में पानी के जहरीला हो जाने से मरे कछुओं जैसी अतृप्त आत्माओं का उन्होंने सामूहिक पिंडदान और श्राद्ध किया। समाजसेवी सुरेश नारायण दूसरों के पितरों का श्राद्ध एवं पिंडदान क्यों करते हैं, इस बारे में उनका कहना है कि आत्माएं अपनी मुक्ति के लिये पितृपक्ष के दौरान गया धाम में विचरण करती हैं। कई बार मृतकों के परिजन गया में ऐसी अतृप्त आत्माओं का पिंडदान और श्राद्ध आदि कर्म नहीं कर पाते और ऐसे ही लोगों को अपना पितर मानते हुए नारायण पुत्रभाव से उनका सामूहिक तौर पर श्राद्ध और पिंडदान करते हैं। ❑

मातृवन्दना लोगों की पहली पसंद बनी

हिमाचल प्रदेश की एकमात्र सर्वाधिक वितरण वाली जागरण पत्रिका 'मातृवन्दना' प्रदेश के लोगों की पहली पसन्द बन गई है। मातृवन्दना सम्पादकीय मंडल एवं मातृवन्दना संस्थान के सदस्यों ने गत दिनों प्रदेश के हर जिले में खण्ड स्तर पर पाठक सम्मेलन आयोजित कर मातृवन्दना पाठकों से फीड बैक ली। संस्थान द्वारा जहां-जहां पाठक सम्मेलन आयोजित किये थे, लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और मातृवन्दना पत्रिका को समाज, परिवार, संस्कार और संस्कृति की प्रहरी का खिताब दिया। पाठकों ने बताया कि मातृवन्दना पत्रिका में छपने वाली सामग्री समाज के हर वर्ग के लिये उपयोगी है।

सोलन जिला के अर्की खण्ड में आयोजित पाठक सम्मेलन में एक प्राध्यापक पाठक ने बताया कि मातृवन्दना एक ऐसी पत्रिका है जिसे कोई भी परिवार अपने घर के स्वागत कक्ष में आगंतुक मेहमानों के पढ़ने के लिये मेज पर रख सकता है। उन्होंने बताया कि पत्रिका में जो पाठ्य सामग्री है उसे बच्चे, युवा, बुजुर्ग एवं महिलाएं सब पढ़ सकते हैं। पत्रिका में हर वर्ग के लिये उत्तम स्तर की सामग्री होती है। उन्होंने बताया कि आज टेलीविजन के हर चैनल पर दर्शकों के लिये ऐसे-ऐसे कार्यक्रम दिखाए जाते हैं जिन्हें परिवार में एक साथ बैठकर नहीं देखा जा सकता। अन्य पत्रिकाओं में भी ग्लैमर अधिक और अच्छे संस्कारों वाले लेख कम होते हैं।

मातृवन्दना एक ऐसी पत्रिका है जिसे कोई भी परिवार अपने घर के स्वागत कक्ष में आगंतुक मेहमानों के पढ़ने के लिये मेज पर रख सकता है। पत्रिका में जो पाठ्य सामग्री है उसे बच्चे, युवा, बुजुर्ग एवं महिलाएं सब पढ़ सकते हैं। पत्रिका में हर वर्ग के लिये उत्तम स्तर की सामग्री होती है।

शिमला (संजोली) के पाठक सम्मेलन में सौर ऊर्जा क्षेत्र में कार्यरत एक पाठक का कहना था कि उनकी बेटी ने तीन वर्षों के मातृवन्दना के सभी अंकों का संग्रहण किया हुआहै। उनके विद्यालय में प्रति वर्ष होने वाली भाषण प्रतियोगिताओं के लिये वह उन्हीं अंकों से विषय सामग्री चुनती है और हमेशा प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करती है।

एक अन्य पाठक का कहना था कि मातृवन्दना पढ़कर ही मुझे वास्तविक धर्मनिरपेक्षता का बोध हुआ है और अपने धर्म और संस्कृति के प्रति आस्था उत्पन्न हुई है।

हमीरपुर जिला के गलोड खण्ड में आयोजित पाठक सम्मेलन में पत्रिका के पाठक सुनील दत का कहना था कि वर्तमान में मातृवन्दना जैसी पत्रिका ही समाज में एक जागरूक प्रहरी की भूमिका निभा सकती है और समाज को एक सूत्र में बांधने के लिये इस पत्रिका की भूमिका सराहनीय है।

मातृवन्दना संस्थान के सदस्यों ने जगह-जगह पाठकों के समक्ष मातृवन्दना पत्रिका की भूमिका एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पूरे देश भर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा कुल 34 जागरण पत्रिकाएं हर प्रांत में चलाई जा रही हैं। जो भारत का गौरव, हिन्दू संस्कृति, हिन्दू विचारधारा व हिन्दुत्व की सही परिकल्पना के प्रचार प्रसार में लगी हैं। उन्होंने बताया कि मातृवन्दना पत्रिका भी पिछले 14 वर्षों से हिमाचल की जनता के समक्ष अपने विचार पहुंचा रही है। आज मातृवन्दना की 32 हजार प्रतियां छपती हैं और लगभग 9 हजार गांवों तक इसकी पहुंच है। प्रदेश भर में लगभग 3 लाख इसके नियमित पाठक हैं। उन्होंने बताया कि अब तक मातृवन्दना का सम्पादकीय मण्डल पत्रों के जरिये लोगों के सुझाव आमंत्रित करता आया है। इस बार जगह-जगह पाठक सम्मेलन आयोजित कर पाठकों से सीधा सम्पर्क साधा गया और उनके सुझाव लिये गए।

पाठक सम्मेलन में अधिकांश पाठकों ने विशेषांकों को सराहा और कारगिलयुद्ध क्रांतिवीर एवं प्राचीन विज्ञान परम्परा जैसे विषयों पर आधारित विशेषांकों की प्रतियों को सहेज कर रखने की बात की। ❑

संघर्ष

सफलता के लिए संघर्ष कर।
कुछ कर गुजरने के लिए संघर्ष!
असफलता के डर से दूर भागना नहीं,
हैं जब तक सांसे संघर्ष कभी छोड़ना नहीं,
देखो प्रकृति, इसमें छुपे संघर्ष को,
चींटी, मकड़ी, तितली करती हैं, संघर्ष जीवन-यापन को।
नदी की धारा बहती संघर्ष के बिना नहीं,
क्या पहुंची वो धारा सागर में, जिसने कभी संघर्ष किया नहीं,
असफलता के डर से दूर भागना नहीं,
हैं जब तक सांसे संघर्ष कभी छोड़ना नहीं,
रोम-मिस्र की प्राचीन सभ्यताएं...
रहा कोई ऐसा, जिसने कभी इनका गुणगान किया नहीं,
कहते हैं मिट गई हस्ती उनकी...
उन्होंने कभी बदलाव से संघर्ष किया नहीं;
आज रहा 'डायनासोर' का वजूद नहीं,
विशालकाय, सबल थे कभी, धरा पर यहीं,
बदलाव से संघर्ष उन्होंने किया नहीं,
असफलता के डर से दूर भागना नहीं,
है जब तक सांसें, संघर्ष कभी छोड़ना नहीं,
वो (पेड़) कभी फूलों से लदे नहीं,
जिन्होंने सर्द हवा के झोंकों को कभी झेला नहीं,
खरा सोना वही जो तपा हो निरंतर
क्या वह सोना चमका कभी, जो आग में तपा नहीं,
'सरवाइवल ऑफ फिटेस्ट' कहा यूं ही नहीं,
'संघर्ष' जिसने नहीं किया, वो इस जहां में रहा नहीं,
असफलता से दूर भागना नहीं,
हैं जब तक सांसें संघर्ष कभी छोड़ना नहीं,

सतीश कुमार, कुमारसैन, शिमला

गौ दुर्दशा

युग-युगान्तर से है यह भारत माता।
जहां पूजित होती थी सर्वदा गौ माता।।
राजनेता के नारे से नहीं भारत मां की जय।
गौ सेवा, गौ सदन से होगी भारत मां की जय।।
दिन-प्रतिदिन हो रहा क्यों गोवंश अपमान।
भूदान, गौदान, दुग्धदान है तीनों महादान।।
वर्षण, प्रभा-जन, झंझा में भूखी-प्यासी न रहे।
कर्त्तव्य हमारा यही रहे, यह कोई कष्ट न सहे।।

श्री रोशनलाल ठाकुर, तेगूबेहड़, कुल्लू

भारत मां

तू धरती हमारी माता
गुण तेरे सारा जग गाता
करते हैं हम तुझे प्रणाम
भारत मां... भारत मां
साग-सब्जी तू तिलहन उपजाती
अनाज, कन्द मूल हमें खिलाती
तू मां, हम तेरी संतान
भारत मां... भारत मां
तुझे दु:ख हमसे मिलते
युग बीत गए पीड़ा सहते
तू देती नहीं ध्यान
भारत मां... भारत मां
पूत कपूत हो जाता
पर माता नहीं होती कुमाता
तू करती सबका गुणगान
भारत मां... भारत मां

चेतन कौशल 'नूरपुरी' नूरपुर, कांगड़ा

सहयोग

सहयोग से हर काम बनता है
मुद्दा कितना भी पेचीदा हो
बातचीत से सुलझता है
हमें अयोध्या को
एक भव्य राम मंदिर
देना होगा
सहयोग अपनों से परायों से
लेना होगा।
वक्त आ गया है
हर मजहब सहयोग करे
खोल मन की गांठें,
सहयोग अनमोल करे।
इतिहास गवाह है गगलवी!
हिन्दू मुस्लिम एकता का
वो पल भी याद है,
मिलकर देश आजाद कराया था
जय श्रीराम, अल्लाहु अकबर का
उद्घोष गाया था।
मिलकर जय हिन्द
वन्देमातरम् गाया था!

के.सी. शर्मा 'गगलवी', कांगड़ा

महान नारी झांखो

❑ उषा चौहान

भारतीय संस्कृति में नारी को देवी अथवा शक्ति के रूप में प्रतिष्ठापित किया गया है, एक नारी अनेकों रूपों को धारण करके राष्ट्र एवं समाज के निर्माण में अपना योगदान अनन्त काल से करती आ रही है। कन्या रूप में जन्म लेने पर पिता को कन्यादान (महादान) का पुण्य प्राप्त होता है, उसके उपरान्त महात्याग करते हुए अपनी जन्म स्थली का परित्याग करके पत्नी रूप में पति के घर को अपना लेती है और तीसरे रूप में मां का पवित्र स्थान प्राप्त करती है। नारी के इन तीन रूपों को सभी भली भांति जानते हैं किन्तु नारी का एक शक्ति रूप भी है, जिसका उदाहरण इतिहास में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, अथवा महारानी दुर्गावती इत्यादि की गौरवगाथा के रूप में वर्णित है। इसी भांति अनेकों वीरांगनाओं ने समय-समय पर राष्ट्र एवं धर्म की रक्षा हेतु प्राणाहुति देकर जहां इतिहास में अपनी अमर छाप छोड़ दी है वहीं आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणा स्त्रोत एवं क्षात्रभाव जागृत करने में अहम् भूमिका निभाई है।

अनेकों वीरांगनाओं ने समय-समय पर राष्ट्र एवं धर्म की रक्षा हेतु प्राणाहुति देकर जहां इतिहास में अपनी अमर छाप छोड़ दी है वहीं आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणा स्त्रोत एवं क्षात्रभाव जागृत करने में अहम् भूमिका निभाई है। इन वीरांगनाओं की श्रृंखला में यशस्वी नारी झांखो देवी का नाम गौरवगाथा के रूप में प्रचलित है।

इन वीरांगनाओं की श्रृंखला में यशस्वी नारी झांखो देवी का नाम सिरमौर एवं शिमला जनपदों में गौरवगाथा के रूप में प्रचलित है, यहां की पहाड़ी भाषा में 'झांखो का पवाड़ा' गीतमाला में प्रसिद्ध है। गिरि गंगा सिरमौर और शिमला जनपदों के मध्य बहती है तथा सीमा का निर्धारण करती है, इसी नदी से सिरमौर का पझौता क्षेत्र तथा रासू क्षेत्र मिलता है। यहां पर क्षत्रिय वंश के दो शक्तिशाली राजपूत वंश छमराल़ और डरोंल़ी निवास करते हैं। छमराल़ वंश कुफर-दोची कल्यो, पाब, डल़ेया आदि गांव में रहते हैं तथा डरोंल़ी वंश के लोग डिब्बर-धाली, ढांग, पदार तथा डरोंल गांव में रहते हैं। इन दोनों की परस्पर रिश्तेदारी तथा तालमेल था। किन्तु इनकी भूमि सीमा मिलती थी। सीमा पर विवाद होता रहता था। अकस्मात् ही विवाद बढ़ गया और झगड़े का उग्ररूप धारण हो गया। दोनों ओर के योद्धा सीमा पर युद्ध करते और जब किसी ओर का योद्धा मार दिया जाता तो लड़ाई समाप्त हो जाती थी और आगामी युद्ध की ललकार देकर लौट जाते थे तथा पुन: युद्ध की तैयारी में जुट जाते थे। यह लड़ाई का क्रम चलता रहा परिणाम यह हुआ कि छमराल के सत्रह और डरोंली के अठारह योद्धा मारे गए। पुन: युद्ध की तैयारी होने लगी।

कुफर गांव का छमराल मुख्य योद्धा अजबा जिसके डांगरू की टंकार सुनते ही शत्रुपक्ष भयभीत हो जाया करता था उसने डरोंली के अनेकों मूंड काट लिये थे। आज घर पर न था, वह आतिथ्य करने अपने ससुराल पिरण गांव जोकि गिरी नदी के पार शिमला जनपद में स्थित है वहां कीर वंश के राजपूत रहते हैं- गया हुआ था। उसे युद्ध की भनक तक न थी, इधर कुफर में उसकी अनुपस्थिति चिंता का कारण बनी हुई थी। इतना समय शेष नहीं बचा था कि किसी के द्वारा उसे बुलाया जा सके। प्रमुख लोगों ने निर्णय लिया कि यदि देर रात तक अजबा नहीं लौटेगा तो प्रात:काल नगारे का रुख पीरण गांव की तरफ करके नगारे पर जुझारू बाजे की चोट करनी चाहिये। इसके सुनते ही अजबा रण भूमि पर पहुंच ही जाएगा। देर रात तक प्रतीक्षा की गई किन्तु अजबा नहीं लौटा।

प्रात: सूर्योदय के समय सभी छमराल़ योद्धा अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र सहित माता के आंगन में एकत्रित हुए, नगारे तथा अन्य वाद्ययंत्रों का मुंह पीरण की ओर करके रथेवला की धुन बजने लगी उसकी शक्तिशाली गूंज दशों-दिशाओं में गूंजने लगी। ठीक उसी समय अजबा पीरण गांव में घर लौटने के लिये तैयार था। सास-श्वसुर ने उसे भोजन करके जाने को कहा- अजबा लोटा लेकर हाथ धोने बरामदे में आया ही था कि उसके कानों में जुझारू नगारे की धुन सुनाई दी, वह गौर से कुफर की ओर देखने लगा, देखा तो यह बाजा कुफर में ही बज रहा था तथा श्वेत ध्वज व लाल ध्वज आसमान की ओर फहरा रहे थे। अजबा के मस्तिष्क में बिजली सी कौंध गई, हाथ धोने का लोटा हाथ से गिर कर भूमि पर गिर गया, उसने भीतर प्रवेश किये बिना ही चले जाने को कहा? उसकी धर्मपत्नी झांखो देवी ने कहा- 'मैंने बहुत बुरा स्वप्न देखा है। कृपया आज आप मत जाइये।' किन्तु वह नहीं माना। झांखों को तो यह पूर्वाभास था कि उसका पति रण क्षेत्र में जाए बिना न रहेगा। उसने भीतर जाकर आरती की थाली लाई और पति की आरती उतारने लगी। कुछ ही क्षणों में वह अपने बंधुओं की सेना से जा मिला। उसको आते देख सभी योद्धा प्रसन्न हुए अपनी विजय सुनिश्चित जान पूरी सेना उत्साह के साथ सीमा की ओर बढ़ी। ❑ (क्रमश:)

वृद्धावस्था में अस्थियों की चोट एवं उपचार

❑ डॉ. के.के. शर्मा, एम.डी. (आयु.)

आकर न जाए वह बुढ़ापा देखा।
जाकर जो न आए वह जवानी देखी।।

प्रत्येक प्राणी को अपने जीवन में विभिन्न अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। जन्म, बचपन, जवानी, वृद्धावस्था एवं मृत्यु। यह एक अटल सच्चाई है। वृद्धावस्था प्रत्येक प्राणी में आनी ही है। वृद्धावस्था या जरावस्था में शरीर के अन्दर कई प्रकार के प्रभाव पड़ते हैं। शरीर के विभिन्न अवयवों में आयु के बढ़ने पर कई प्रकार के प्रभाव पड़ते हैं। कई बार प्रत्येक मनुष्य के खान-पान, जलवायु, पारिवारिक कारणों से वृद्धावस्था के फलस्वरूप होने वाले प्रभाव जल्दी पड़ने शुरू हो जाते हैं जबकि कुछ में यह प्रभाव देर बाद दृष्टिगोचर होते हैं।

वृद्धावस्था में प्राय: गिरने के फलस्वरूप अस्थियों का टूटना, जोड़ों में चोट आदि विकार उत्पन्न होते रहते हैं। वृद्धावस्था के फलस्वरूप हड्डियों का कमजोर पड़ जाना, दृष्टि की कमजोरी, मांसपेशियों की कमजोरी, उच्चरक्तचाप, मधुमेह आदि विभिन्न अवस्थाओं में चोट लगने की अधिक सम्भावना रहती है। स्त्रियों में मासिक धर्म के बंद हो जाने पर भी हड्डियों के कमजोर पड़ने के कारण ऐसी चोट लगने की सम्भावना बढ़ जाती है।

वृद्धावस्था में सावधानियां

सावधानियां : वृद्धावस्था में यदि निम्नलिखित सावधानियां रखें तो प्राय: हड्डियों में चोट कम होने की सम्भावना रहती है–

1. यदि वृद्धावस्था में मोतियाबिंद उतर रहा हो तो आंखों के चिकित्सक से परामर्श से यथाशीघ्र उसका ऑप्रेशन करवा लेना चाहिये ताकि नेत्र ज्योति ठीक रहें। समय-समय पर चश्मे का नम्बर भी चैक करवा लेना चाहिये।
2. बुजुर्गों के कमरे में उचित प्रकाश उपलब्ध रहना चाहिये। रात्रि में उठने के लिये बिस्तर के पास ही बिजली के स्विच की व्यवस्था करनी चाहिये।
3. बाथरूम, लैट्रिन आदि हमेशा सूखे रहने चाहिये एवं उनमें पानी कभी भी खड़ा नहीं रहना चाहिये। इन स्थानों पर लगी टाइलों, पत्थर आदि का विशेष ध्यान रखें ताकि इन पर चलते समय फिसलने से बचा जा सके।
4. वृद्धों के लिये बाथरूम, लैट्रिन आदि उनके सोने के स्थान के यथासंभव नजदीक हो।
5. यथासंभव समान को व्यवस्थित रखें ताकि समान में उलझ कर वृद्ध गिरने से बच सकें।
6. सीढ़ियों आदि में रेलिंग आदि की उचित व्यवस्था होनी चाहिये।
7. वृद्ध लोगों को छड़ियों का आवश्यकतानुसार सहारा लेना चाहिये ताकि चोट से बचा जा सके। छडी का आधार चौड़ा होना चाहिये ताकि उसकी ठीक पकड़ बन सके।

वृद्धावस्था में हड्डियां जुड़ने के लिये काफी अधिक समय लेती हैं। प्लास्टर का अधिक समय तक लगे रहने से रोगी को बिस्तर पर लेटे रहने, अधिक हिलडुल न कर सकने के कारण, शौच, नहलाना, धुलाना, खाना-पीना आदि बिस्तर पर ही करने के कारण, वृद्ध रोगियों में अनेक उपद्रव उत्पन्न हो सकते हैं यथा रक्तवाहिनियों में रक्त का जम जाना, नितम्ब आदि में व्रण जोकि कई बार वृद्ध रोगी के लिये प्राणघातक हो सकते हैं। उपरोक्त सावधानियों का प्रयोग करके वृद्ध रोगियों के जीवन को सुखदायक बनाया जा सकता है।

उपचार : यदि किसी कारणवश वृद्ध में गिरने, फिसलने आदि के फलस्वरूप चोट लग जाती है तो उन्हें यथासम्भव चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवानी चाहिये।

1. चोट लगने पर रोगी को चिकित्सक को दिखाकर उचित औषध लेनी चाहिये।
2. आवश्यकतानुसार चिकित्सक के निर्देश पर एक्स-रे आदि करवाकर चोट का निदान करवाना चाहिये। हड्डी के टूटे होने की अवस्था में रोगी को अस्पताल में दाखिल भी करवाया जा सकता है।
3. यदि रोगी को अस्पताल में दाखिल करवाने की आवश्यकता हो तो यथासम्भव रोगी को स्ट्रेचर पर ही ले जाएं। यदि हड्डी टूटी हो तो कुशा या स्पिलिंट किसी का प्रयोग अवश्य करें। इन उपायों से रोगी को अधिक नुकसान होने की सम्भावना समाप्त हो जाती है।
4. चिकित्सक को रोगी के बारे में सारी जानकारी, विशेषतया पुराने रोग, औषध, आप्रेशन आदि के बारे अवश्य बतलाएं। ❑

(लेखक शिमला के क्षेत्रीय आयुर्वेदिक अस्पताल में कार्यरत हैं एवं शल्य चिकित्सक हैं। मो. 94182-06090)

जुबान सम्भाल के!

❑ अश्विन कुमार

कांग्रेस के युवा सांसद राहुल गांधी ने प्रतिबंधित आतंकी संगठन सिमी की तुलना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से करके पूरी तरह राजनीतिक अपरिपक्वता और नासमझी का सबूत दिया है। दोनों संगठनों की तुलना करना भारत की पहचान से बेखबर होने के अलावा और कुछ नहीं है। मैंने संघ को बड़े करीब से देखा और समझा है। मैं संघ को उस समय से जानता हूं जब राहुल गांधी शायद पैदा भी नहीं हुए होंगे। पत्रकार का धर्म हकीकत को सबके समक्ष सच्चाई और बिना किसी द्वेष के पेश करना होता है। संघ निश्चित रूप से हिन्दू राष्ट्रवाद का प्रवर्तक है और हिन्दू संस्कृति को भारतीय संस्कृति के पर्याय के रूप में देखता है मगर इसकी राष्ट्रभक्ति पर संदेह करना रात को दिन बताने की तरह है। जरा सोचिये आजादी से पहले जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी अपने वर्धा आश्रम के सामने ही लगे संघ के शिविर में गए थे तो उन्हें स्वयंसेवकों की अनुशासन प्रियता और जाति-पाति के बंधन से दूर देख कर कहना पड़ा था कि यदि कांग्रेस के पास ऐसे अनुशासित कार्यकर्ता हों तो आजादी का आंदोलन अंग्रेजों को देश छोड़ने के लिये बहुत जल्दी मजबूर कर देगा। इतना ही नहीं महान समाजवादी चिंतक और जन नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया ने भी संघ के बारे में कहा था कि यदि मेरे पास संघ जैसा संगठन हो तो मैं पूरे देश में पांच साल के भीतर ही समाजवादी समाज की स्थापना कर सकता हूं। संघ ऐसा संगठन है जिसकी प्रशंसा स्वयं पं. जवाहर लाल नेहरू ने भी की थी।

संघ भारतीय संस्कृति का विश्वविद्यालय रहा है। यह जिस हिन्दू गौरव की बात करता है उसका मतलब मुस्लिम विरोध नहीं है बल्कि मुस्लिम पहचान को भारत की जड़ों में खोजना है। संघ शुरू से ही कहता रहा है कि भारत के मुस्लिम भी मूल रूप से भारतीय हैं और इनके पुरखों और हमारे पुरखों में कोई भेद नहीं है।

1962 के भारत-चीन युद्ध के समय संघ के कार्यकर्ताओं ने जिस प्रकार भारत की सेनाओं का मनोबल बढ़ाने के लिये खुद पूरे देश में आगे बढ़ कर नागरिक क्षेत्रों में मोर्चा सम्भाला था उसे देख कर स्वयं पं. नेहरू को इस संगठन की राष्ट्रभक्ति की प्रशंसा करनी पड़ी थी और उसके बाद 26 जनवरी की परेड में संघ के गणवेशधारी स्वयंसेवकों को शामिल किया गया था। 1965 के भारत-पाक युद्ध के समय भी संघ के स्वयंसेवकों ने पूरे देश में आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में पुलिस प्रशासन की पूरी मदद की थी और छोटे से लेकर बड़े शहरों तक में इसके गणवेशधारी कार्यकर्ता नागरिकों को पाकिस्तानी हमले के समय सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया करते थे। इनकी जुबान पर हमेशा भारत माता की जय का उद्घोष रहता है। भारत में हिन्दू संस्कृति की बात करना क्या गुनाह है?संघ पर महात्मा गांधी की हत्या के बाद प्रतिबंध जरूर लगाया गया था मगर बापू की हत्या में संघ के किसी कार्यकर्ता का हाथ नहीं पाया गया था। हिन्दू महासभा के नेता स्व. वीर विनायक दामोदर सावरकर को भी इस हत्याकांड में गिरफ्तार किया गया था मगर उनकी राष्ट्रभक्ति पर भी क्या कोई कांग्रेसी प्रश्नचिह्न लगा सकता है?सावरकर के गुरु बंगाल के क्रांतिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा थे। संघ और हिन्दू महासभा की विचारधारा में भी मूलभूत अंतर शुरू से ही रहा है। हिन्दू महासभा राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दुओं के सैनिकीकरण के पक्ष में थी जबकि संघ के संस्थापक डॉ. बलिराम केशव हेडगेवार का लक्ष्य हिन्दुओं का मजबूत सांस्कृतिक संगठन स्थापित करना था। इस सच को कैसे झुठलाया जा सकता है कि 1947 में भारत का बंटवारा होने के समय संघ के कार्यकर्ताओं ने पश्चिमी पाकिस्तान (पंजाब) के मोर्चे पर हिन्दुओं की रक्षा की थी।

मैं फिलहाल राजनीतिक सोच की बात नहीं कर रहा हूं बल्कि संघ की व्यावहारिक कार्यप्रणाली की बात कर रहा हूं। संघ भारतीय संस्कृति का विश्वविद्यालय रहा है। यह जिस हिन्दू गौरव की बात करता है उसका मतलब मुस्लिम विरोध नहीं है बल्कि मुस्लिम पहचान को भारत की जड़ों में खोजना है। संघ शुरू से ही कहता रहा है कि भारत के मुस्लिम भी मूल रूप से भारतीय हैं और इनके पुरखों और हमारे पुरखों में कोई भेद नहीं है। धर्म बदलने का अर्थ राष्ट्रीयता बदलना नहीं होता है लेकिन जब मजहब बदलने से राष्ट्रीय चिंतन को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है तो आपत्ति वहीं होती है। इसलिये राहुल गांधी को पहले भारत का सच जानना चाहिये और फिर कोई टिप्पणी करनी चाहिये। राहुल गांधी का महत्व इसलिये नहीं है कि वह एक सांसद हैं बल्कि इसलिये है कि वह नेहरू-गांधी परिवार के वारिस हैं। भारत की नई पीढ़ी युवा नागरिकों को उनके सुन्दर चेहरे या विरासत से कोई खास लेना-देना नहीं है बल्कि उनकी योग्यता से लेना-देना है। उन्हें पहले यह योग्यता हासिल करनी होगी। ❑ साभार : पंजाब केसरी सम्पादकीय 8 अक्तू.2010

पंच पर्व है दीपावली

भारत के सम्पूर्ण त्यौहारों में दीपावली का अपना विशेष स्थान है। इस पुनती पर्व के साथ हमारे युग-युग का वह राममय इतिहास जुड़ा है जहां आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम 14 वर्षों के वनवास केपश्चात् राजधानी अयोध्या लौटते हैं और अयोध्या नगरी दीयों से भावविभोर हो जगमगा उठती है। यही कारण है कि जिस उल्लास और उतसाह के साथ समस्त भारत में यह त्यौहार मनाया जाता है, वह अन्य पर्वों पर कम ही दिखाई पड़ता है। आप किसी भी प्रांत में चले जाइए। इस अवसर पर सर्वत्र ही आपकी नव उत्साह और एक नई उमंग के दर्शन होंगे। घरों में सप्ताहों पूर्व इस समारोह की तैयारी होती है और अमावस की रात्रि दीपों से जगमग उठती है। स्त्री, बालक, वृद्ध, युवा सभी आनंद विभोर हो वरदायिनी मां लक्ष्मी की उपासना करते हैं और उससे अपने प्रदीपालोकित गृह में पधारने की अभ्यर्थना करते हैं। भारत के प्राय: सभी प्रांतों में दीपावली का सामान्य रूप उपलब्ध होता है। विशेषत: पंचपर्व है दीपावली। त्यौहार इस प्रकार होते हैं। 1. धनत्रयोदशी, 2. नरक चतुर्दशी, 3. दीपावली, 4. गोवर्धन पूजा, 5. भाई दूज। इन्हीं पंच पर्वों का रहस्यमय विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे आप भी भली-भांति परिचित हो सकें कि हमारी परम्पराएं एवं रीति-रिवाज कितने सुदृढ़ एवं वैज्ञानिक हैं।

1. धनत्रयोदशी : कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को 'धनतेरस' कहते हैं। इस दिन लोग सतैल स्नान करते हैं। व्यापारी लोग अपना हिसाब-किताब नया शुरू करते हैं और बही-खाता तथा रोकड़ एकत्र कर उनकी पूजा करते हैं। द्वीप-माला इसी दिन से जलाई जाती है और पांच दिन तक बराबर जलाई जाती है। पीयूषपाणि भगवान धंवंतरि के नाम से कौन साक्षर अपरिचित होगा?संसार के रोगार्त प्राणियों के लिये अमृत-कलश लिये हुए समुद्र मंथन से उत्पन्न होने वाले धंवंतरि ने संसार में आयुर्वेद-विद्या का प्रसार कर जो महान उपकार किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी उन्हीं भगवान का जयंती दिन है, जिसे साधारण जनता 'धनतेरस' के नाम से खूब जानती है।

अभी तक धंवंतरी त्रयोदशी का प्रचार प्रमुखता वैद्यसमुदाय में ही है, किन्तु आज जब कि रोग को समूल नाश करने वाले आयुर्वेद के उपचार की उपेक्षा कर लोग स्वल्पकालिक लाभप्रद किन्तु परिणामे-दुखद पाश्चात्य-चिकित्सा की तरह बुरी तरह आकर्षित होते जा रहे हैं, जब आवश्यकता इस बात की है कि भगवान धंवंतरी की यह जयंती आम जनता में खूब धूमधाम से मनाई जाए और जनता को देशी औषधियों के प्रति प्रेम उत्पन्न करने की प्रेरणा की जाए।

2. नरक चतुर्दशी : इस दिन तेल लगाकर अपामार्ग और चकबक से शरीर को प्रोक्षण कर और उसे चारों ओर घुमाकर स्नान करे। ऐसा करने से साल भर चोरों का भय नहीं रहता। इस दिन यम और भीष्म को वे भी जल दान देते हैं, जिनके माता-पिता जीवित हैं। संध्या के समय नकर-निवृत्ति के लिये चार बत्तियों का दीपक यम देवता के लिये सर्व-प्रथम जलाना चाहिये। आज के दिन भगवान कृष्ण ने नरकासुर नामक अत्याचारी शासक का वध करके संसार को भीतिमुक्त किया था, इस विजय की स्मृति से यह पर्व मनाया जाता है, ऐसा पुराणों में उल्लेख मिलता है।

3. दीपावली : यदि अमावस्या आधी रात तक हो तो उसी दिन लक्ष्मी पूजा करनी चाहिये। इसको 'महारात्रि' कहते हैं। रात्रि में लक्ष्मी और कुबेर का पूजन होता है। इस दिन निर्जल व्रत करना चाहिये या फिर फलाहार या दूध देना चाहिये। संध्या से रात्रि भर घर का प्रत्येक भाग प्रकाशित रखकर जागरण करना चाहिये। दूसरे दिन सवेरे (दीपावली के दिन) दही, दूध आदि से पार्वण-श्राद्ध करे, फिर महालक्ष्मी को दीप-दान करे और श्वेत वस्त्र पहनकर भोजन करे। इस दिन श्वेत वस्त्र पहने और पूजा में श्वेत पुष्प ही काम में लावें।

4. गोवर्द्धन पूजा : कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्द्धन की पूजा गो पूजा और अन्न-कूट होता है। अन्न-कूट को वह प्रतिपदा ली जाती है, जिसमें शाम को द्वितीया न पड़ती हो। इसका प्रारम्भ पांच हजार वर्ष पूर्व भगवान कृष्ण द्वारा गोवर्द्धन पर्वत की तलहटी के उद्धार और कृषि साधनों के नवीनीकरण के अवसर पर हुआ था। इस पर्व के प्रारम्भ होने से पूर्व ब्रजमंडल की जनता 'देव मातृक' थी, अन्न के लिये वर्षा पर निर्भर रहती थी। भगवान ने गोवर्द्धन से वर्षा काल में बहने वाले जल स्रोतों को बृहत्तडाग रूप में बांध कर जहां अनावृष्टि के समय सिंचाई का प्रबंध किया, वहां इंद्र के कोप से होने वाली अतिवृष्टि की दुखद बाढ़ में डूबते हुए ब्रज-मंडल को भी गोवर्द्धन को उठाकर बचा लिया। गोवर्द्धनोद्धार की वह सुखद स्मृति आज भी हमारे हृदयपटल में सदैव सुरक्षित है। हमें इस दिन अपनी राष्ट्र की गो-पृथ्वी और गाय दोनों की उन्नति तथा विकास की ओर ध्यान देना चाहिये और इनके संवर्द्धन के लिये प्रयत्नशील होना चाहिये, यही इस 'गोवर्द्धन' पर्व का महान संदेश है।

भारत के सम्पूर्ण त्यौहारों में दीपावली का अपना विशेष स्थान है। इस पुनती पर्व के साथ हमारे युग-युग का वह राममय इतिहास जुड़ा है जहां आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम 14 वर्षों के वनवास केपश्चात् राजधानी अयोध्या लौटते हैं और अयोध्या नगरी दीयों से भावविभोर हो जगमगा उठती है।

5. यम-द्वितीया (भैया दूज) : दोपहर तक द्वितीया हो, उसे ग्रहण करना चाहिये। भाई को बहन के घर जाकर भोजन करना चाहिये। विशेषत: चावल खिलाने का विधान है। भाई वस्त्र, द्रव्य आदि से बहन का सत्कार करे। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को सम्पन्न होने वाला पर्व-भातृ द्वितीय या भैयादूज हिन्दू समाज का आदर्श पारिवारिक पर्व है। पौराणिक आख्यान के अनुसार इस दिन भगवान यम अपनी बहन यमुना के यहां मिलने जाया करते हैं और उन्हीं के अनुकरण पर इस दिन जो लोग अपनी बहनों से मिलते, उनका यथेष्ट सम्मान पूजनादि करके उनसे आशीर्वाद रूप तिलक प्राप्त करते हैं, उन्हें इस दिन मृत्यु भय नहीं रहता। भैयादूज भी एक ऐसा ही पर्व है। इस अवसर पर भाई अपनी बहनों के यहां उनकी पारिवारिक स्थिति का परिचय प्राप्त करते हैं। अपनी सामर्थ्यानुसार वे उसे भेंट देकर अपने भ्रातृ-स्नेह को दृढ़ करते हैं। यह दृढ़ पारिवारिक संगठन ही भारतीय कुटुम्ब प्रणाली की जान है। ❑

स्वदेशी स्वीकारें,

प्रयोग करें

पीने का पानी : बिसलेरी, बैली, नॅचरल, अन्य स्थानीय उत्पादन

आईस्क्रीम : दिनशॉ, जॉय, वाडीलाल, श्रीराम, पेस्तनजी, नेचर वर्ल्ड, गोकूल, अमूल, हिमालय, निरूला, पेरीना, मदर डेयरी ओर, बिंडी, हॅव मोर, वेरका तथा अन्य स्थानीय उत्पादन

खाद्य तेल खाद्य पदार्थ : सनफ्लावर, मारूति, पोस्टमैन, धारा, रॉकेट, गिन्नी, स्वीकार, कॉरनेला, सनड्राप, रथ, मोहन, उमंग, विजया, सपन, पॅराशूट, अशोक, सफोला, कोहिनूर, मधुर, इंजन, गगन, अमत, वनस्पति, रामदेव, एमडीएच, एवरेस्ट, बेडेकर, कुबल, डाबर, सहकार लिज्जत, गणेश, शक्तिभोग आटा, टाटा नमक, एमटीआर तथा अन्य स्थानीय उत्पादन।

विदेशी नकारें

बहिष्कृत करें

पीने का पानी : ॲक्वाकिना, किन्ले, नेसले नॅचरल

आईस्क्रीम : कॅडबरी, डॉलॉप, नाईस, ब्रुक ब्रांड के उत्पादन, क्वालिटी वॉल्स, कॉरनेली, बास्कीन-रॉबिन्स, यांक-डूडल्स, कॉरनेट्टो

खाद्य तेल खाद्य पदार्थ : डालडा, क्रिस्टल, लिप्टन, अन्नपूर्णा नमक, आटा और चपाती, मंगी, किसान, तरला, ब्रुक-बॉड, पिल्सबरी आटा, कैप्टन कुक नमक और आटा, मॉडर्न चपाती, कारगिल आटा, अंकल चिप्स, लेज, लेहर

सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत के विजयादशमी अवसर पर नागपुर में कहा

कश्मीर: अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की बिसात

कश्मीर में संकट गंभीर व जटिलतर बन गया है। हमारी उपेक्षा के कारण बाल्टिस्तान व गिलगिट पाकिस्तान के अंग बन गये और चीन ने अपनी सेना की उपस्थिति वहाँ दर्ज कराते हुए भारत को घेरने का कार्य पूर्ण कर लिया है। अफगानिस्तान से बाइज्जत व सुरक्षित स्थिति में भागकर पाकिस्तान को अपने साथ रखते हुए कश्मीर घाटी में अपने पदक्षेप के अनुकूल स्थिति बनाने के लिए अमरीका बढ़ रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की यह बिसात घाटी में बिछ जाने के पहले ही हमारी पहल होनी चाहिए। किसी भी केन्द्र सरकार का अपने देश के अविभाज्य अंगों के प्रति यह अनिवार्य कर्तव्य होता है। भारत की सार्वभौम प्रभुसत्तासंपन्न सरकार को अलगाववादी तत्वों के द्वारा कराये गये प्रायोजित पथराव के आगे झुकना नहीं चाहिए। सेना के बंकर्स हटाने से व उसके अधिकार कम करने से वहाँ भारत की एकात्मता व अखण्डता की रक्षा नहीं होगी। संसद के वर्ष 1994 में सर्वसम्मति से किये गये प्रस्ताव में व्यक्त संकल्प ही अपनी नीति की दिशा होनी चाहिए। हमें यह सदैव स्मरण रखना है कि महाराजा हरिसिंह के द्वारा हस्ताक्षरित विलयपत्र के अनुसार कश्मीर का भारत में विलीनीकरण अंतिम व अपरिवर्तनीय है।

जम्मू-कश्मीर की सब जनता अलगाववादी नहीं

जम्मू व कश्मीर राज्य में केवल कश्मीर घाटी नहीं है। और उसमें भी स्वायतत्ता की माँग करने वाले व उसकी आड़ में अलगाव को बढ़ावा देकर आजादी का स्वप्न देखने वाले लोग तो बहुत थोड़े ही है। अत: हमें घाटी के साथ-साथ जम्मू एवं लद्दाख की कठिनाइयों व उनके साथ सालों से चले आ रहे भेदभाव के बारे में भी गम्भीरता से विचार करना होगा। घाटी में अलगाववादी तत्वों के बहकावे में आ गये नौजवानों एवं सामान्य जनता से बात अवश्य ही होनी चाहिए। पर इसके साथ ही समूचे जम्मू-कश्मीर के राष्ट्रवादी सोच के मुसलमानों, गुज्जर-बक्करवालों, पहाड़ियों, शियाओं, सिक्खों, बौद्धों, कश्मीरी पण्डितों एवं अन्य हिन्दुओं की भावनाओं, आवश्यकताओं व आकांक्षाओं को भी ध्यान में रखना नितांत आवश्यक है। साथ ही पाक अधिकृत कश्मीर से आये शरणार्थियों की लम्बे समय से चली आ रही न्यायोचित माँगों पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। अपने गाँव व घरों से उजड़े कश्मीरी पण्डितों को ससम्मान, अपनी सुरक्षा व रोजगार के प्रति पूर्ण आश्वस्त हो कर शीघ्रातिशीघ्र घाटी में उनकी इच्छानुसार पुन: स्थापित कराया जाना चाहिए। ये सब भारत के साथ सम्पूर्ण सात्मीकरण चाहते हैं। अत: इन सब की सुरक्षा, विकास व आकांक्षाओं का विचार जम्मू-कश्मीर समस्या के सम्बन्ध में होना ही चाहिए। इन सब पक्षों का विचार करने पर ही जम्मू-कश्मीर के सम्बन्ध में चलायी जाने वाली वार्तायें सर्वसमावेशी और फलदायी हो सकेगी।

स्वतंत्रता के तुरन्त बाद से ही जम्मू व काश्मीर की प्रजा भेदभाव रहित सुशासन व शांति की भूखी है। वह उनको शीघ्रातिशीघ्र मिले ऐसे सजग शासन व प्रशासन की व्यवस्था वहां हो यह आवश्यक है।

चीन: एक गम्भीर चुनौती

तिब्बत में अपनी बलात् उपस्थिति को वैध सिद्ध करने के चक्कर में तिब्बत समस्या की तुलना कश्मीर से करनेवाला चीन अब गिलगिट व बाल्टिस्थान में प्रत्यक्ष उपस्थित है। जम्मू व कश्मीर राज्य तथा उत्तरपूर्वांचल के नागरिकों को चीन में प्रवेश करने के लिए वीसा की आवश्यकता नहीं ऐसा जताकर उसने भारत के अंतर्गत मामलों में हस्तक्षेप करने का प्रयास किया है। चीन के उद्देश्यों के मामले में अब किसी के मन में कोई भ्रम अथवा अस्पष्टता रहने का कोई कारण नहीं रहना चाहिए। उन उद्देश्यों को लेकर भारत को घेरने, दबाने व दुर्बल करने के चीन के सामरिक, राजनयिक व व्यापारिक प्रयास भी सबकी आँखों के सामने स्पष्ट है। उस तुलना में हमारी अपनी सामरिक, राजनयिक व व्यापारिक व्यूहरचना की सशक्त व परिणामकारक पहल, शासन की इन मामलों में सजगता, समाज मन की तैयारी इन पर त्वरित ध्यान देने की कृति होने

की आवश्यकता है। इसमें और विलंब देश के लिए भविष्य में बहुत गंभीर संकट को निमंत्रण देने वाला होगा।

चीन के समर्थन से नेपाल में माओवादियों का उपद्रव खड़ा हुआ व बड़ा हुआ। नेपाल के उन माओवादियों का अपने देश के माओवादी आतंक के साथ भी संबंध है। उनका दृढ़तापूर्वक बंदोबस्त करने के बारे में अभी शासन अपनी ही अंदरुनी खींचतान में उलझकर रह गया है। प्रशासन को पारदर्शी एवं जवाबदेह बनाना, माओवादी प्रभावित अंचलों में विकासप्रक्रिया को गति देना इसके भी परिणामकारक प्रयास नहीं दिखते। कहीं-कहीं तो इस समस्या का भी अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए साधन के रूप में उपयोग किया जा रहा है। देश की सुरक्षा व प्रजातंत्र के लिए यह बात बहुत महंगी पडेगी।

उत्तरपूर्वांचल: देशभक्त जनता की उपेक्षा

उत्तरपूर्वांचल के संदर्भ में भी यह बात महत्वपूर्ण है। वहाँ पर भी अलगाववादी स्वरों को प्रश्रय मिलता है व देश के प्रति निष्ठा रखने वालों की उपेक्षा होती है। इसी नीति के कारण जनसमर्थन खोकर मृतप्राय बनते चले N-S-C-N- जैसे अलगाववादी आतंकी संगठन को फिर से पुनरुज्जीवित होकर अपने आतंक व अलगाव सहित खड़े होने का अवसर मिला। उत्तरपूर्व सीमा के रक्षक बनकर चीन के आहावान को झेलने की हिम्मत दिखाने वाले अरुणाचल की उपेक्षा ही चल रही है। मणिपुर की देशभक्त जनता तो उन अलगाववादियों द्वारा किये गये प्रदीर्घ नाकाबंदी में जीवनावश्यक वस्तुओं के घोर अभाव में तड़पती, राहत के लिए गुहार लगाते-लगाते थक गयी, निराशा के कारण प्रक्षुब्ध हो गयी। अपनी ही देश की देशभक्त जनता की उपेक्षा व अलगाववादियों की बिना कारण खुशामद चीन के विस्तारवादी योजनाओं की छाया में देश की सीमाओं की सुरक्षा की स्थिति को कितना बिगाड़ेगी इसकी कल्पना क्या हमारे नेतागण नहीं कर सकते? विदेशी ईसाई मिशनरियों के षड़यंत्रों एवं उपद्रवों के प्रति लगातार बरती जा रही उपेक्षा ने स्थिति को और अधिक गंभीर बना दिया है।

इस सनातन राष्ट्र की विशिष्ट पहचान, देश की अखंडता व सुरक्षा का आधार, समाज की एकात्मता का सूत्र तथा पुरुषार्थी उद्यम का स्रोत, तथा विश्व के सुख शांतिपूर्ण जीवन की अनिवार्य आवश्यकता हिन्दुत्व ही है, यह अब सर्वमान्य है और अधिकाधिक स्वत:स्पष्ट होते जा रहा है। सभी विविधताओं में एकता का दर्शन करने की सीख देनेवाला, उसको सुरक्षा तथा प्रतिष्ठा देनेवाला व एकता के सूत्र में गूंथकर साथ चलाने वाला हिन्दुत्व ही है। हिन्दुत्व के इस व्यापक, सर्वकल्याणकारी, व प्रतिक्रिया तथा विरोधरहित पवित्र आशय को मन-वचन-कर्म से धारण कर इस देश का पुत्ररूप हिन्दु समाज खड़ा हो।

अनुनय की राजनीति: एक गंभीर खतरा

एक तरफ तो शासन प्रशासन का यह अंधेरनगरी के राजा को ही शोभा देनेवाला इच्छाशक्तिविहीन ढुलमुल रवैया, दूसरी तरफ स्वतंत्रता के 60 वर्षों के बाद भी सच्छिद्र रखी गयी सीमाओं से निरंतर चलने वाली बांगलादेशी घुसपैठ का क्रम। न्यायालयों तथा गुप्तचर एजेंसियों के द्वारा बार-बार दी गयी detect, delete and deport की राय के बावजूद, उसके प्रथम चरण detect तक की कार्यवाही करने की इच्छाशक्ति व दृढ़ता चुनावों में मतों की प्राप्ति के लिए अनुनय में किसी भी स्तर तक उतर सकने वाले हमारे राज्यों के व केन्द्रों के नेताओं ने खो दी है, ऐसा ही चित्र सर्वत्र दिखता है। उत्तरपूर्वांचल के राज्यों व बंगाल व बिहार के सीमावर्ती जिलों में जनसंख्या का चित्र बदल देनेवाली इस घुसपैठ ने वहाँ पर कट्टरपंथी सांप्रदायिक मनोवृत्ति को बढ़ाकर वहाँ की मूलनिवासी जनजातियाँ व हिन्दू जनता को प्रताड़ित करनेवाली गुंडागर्दी व अत्याचारी उपद्रवियों की उद्दंडता व दु:साहस को और प्रोत्साहित किया है। हाल ही में बंगाल के देगंगा में हिन्दू समाज पर जो भयंकर आक्रमण हुआ, वह इन सीमावर्ती प्रदेश में देशभक्त हिन्दू जनता पर गत कुछ वर्षों से जो कहर बरसाया जा रहा है उसका एक उदाहरण है। न वहाँ के राज्य शासन को, न केन्द्र में सत्तारूढ़ नेताओं को हिन्दू जनता के इस त्रासदी की कोई परवाह है। सबकी नजर अपने मतस्वार्थों पर ही पक्की गड़ी है। अंतर्गत कानून, सुव्यवस्था तथा हिन्दुओं की सुरक्षा का सीमावर्ती जिलाओं में टूटना हमारी सीमासुरक्षा को भी ढीला करता है इसका अनुभव शासन-प्रशासन सहित सभी को कई बार देश में सर्वत्र आ चुका है फिर भी यह स्थिति है।

शंका तो यहां तक आती है की इस बात की चिंता भी शासन वास्तविक रूप में करता है कि नहीं? जिस ढंग से इस बार की जनगणना में बिना किसी प्रमाण के, केवल बताने वाले का कथनमात्र प्रमाण मानकर साथ-साथ ही नागरिकता की भी निश्चिति का प्रावधान किया उससे तो अपने देश में अवैध घुसा कोई भी व्यक्ति नागरिक बन जाता। अब सभी नागरिकों को विशिष्ट पहचान क्रमांक (unique Identification number) मिलने वाला है। परंतु पहचान क्रमांक प्राप्त करने वाले वास्तव में इसी देश के नागरिक है यह प्रमाणित करने की क्या व्यवस्था है? योजनाओं के बनाते समय इन सजगताओं को बरतने में ढिलाई अथवा भूलचूक नहीं होनी चाहिए।

जन्मना जातिविरहित समाज की रचना का दावा करते है

तो फिर एक देश के एक जन की गणना में जाति पूछकर फिर एक बार उसका स्मरण दिलानेवाली योजना क्यों बनी? एकरस समाजवृत्ति उत्पन्न करने के लिए अपनी जाति हिन्दू, हिन्दुस्थानी अथवा भारतीय लिखो, बोलो, मानो ऐसा आवाहन देश के गणमान्य विद्वान व सामाजिक कार्यकर्ता कर रहे हैं, तब देश में भावनात्मक एकता लाने के लिए कर्तव्यबद्ध शासन उनका विरोध करते हुये तथा एक-एक नागरिक से उनकी जाति गिनवायेगा क्या? नियोजन के लिये आंकड़ों का संकलन करनेवाली किसी अलग, स्वतंत्र, तात्कालिक व मर्यादित व्यवस्था का निर्माण करना सरकारी क्षमता के बाहर नही है।

करनी और कथनी में अंतर्विरोध

देश को कहाँ ले जाने की हमारी घोषणाएँ है और हम उसको कहां ले जा रहे हैं। अपने देश के जिस सामान्य व्यक्ति के आर्थिक उन्नयन की हम बात करते हैं, वह तो कृषक है, खुदरा व्यापारी, अथवा ठेले पर सब्जी बेचनेवाला, फूटपाथ पर छोटे-छोटे सामान बेचनेवाला है, ग्रामीण व शहरी असंगठित मजदूर, कारीगर, वनवासी है। लेकिन हम जिस अर्थविचार को तथा उसके आयातित पश्चिमी मॉडेल को लेकर चलते हैं वह तो बड़े व्यापारियों को केन्द्र बनाने वाला, गाँवों को उजाड़नेवाला, बेरोजगारी बढ़ानेवाला, पर्यावरण बिगाड़कर अधिक ऊर्जा खाकर अधिक खर्चीला बनानेवाला है। सामान्य व्यक्ति, पर्यावरण, ऊर्जा व धन की बचत, रोजगार निर्माण आदि बातें उसके केन्द्र में बिल्कुल नहीं है।

एक तरफ हम सबके शिक्षा की बात करते हैं, दूसरी तरु शिक्षा व्यवस्था का व्यापारीकरण करते हुए उसको गरीबों के लिए अधिकाधिक दुर्लभ बनाते चले जाते हैं। मानवीय भावना, सामाजिक दायित्वबोध, कर्तव्यतत्परता, देशात्मबोध अपने समाजजीवन में प्रभावी हो ऐसा उपदेश शिक्षा संस्थाओं में जाकर हम देते हैं और इन मूल्यों को संस्कार देनेवाली सारी बातों को निकाल बाहर कर पैसा, अधिक पैसा और अधिक पैसा किसी भी मार्ग से कमाने में ही जीवन की सफलता मानकर, निपट स्वार्थ, भोग तथा जड़वाद सिखानेवाला पाठयक्रम व पुस्तकें लागू करते है। कथनी व करनी के इस अन्तर्विरोध के मूल में अपने देश की वास्तविक पहचान, राष्ट्रीयता, वैश्विक दायित्व तथा एकता के सूत्र का घोर अज्ञान, अस्पष्टता अथवा उसके प्रति गौरव का अभाव तथा स्वार्थ व विभेद की प्रवृत्ति है। सभी क्षेत्रों में राष्ट्र के नेतृत्व करनेवाले लोगों में उचित स्वभाव हों, उचित चरित्र हो, उचित प्रवृत्ति बनी रहे, कभी उसमें भटकाव न आये यह चिन्ता सजगता से करनेवाला जागृत समाज ही इस परिस्थिति का उपाय कर सकता है।

हिन्दुत्वः अनिवार्य आवश्यकता

गत 85 वर्षों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ऐसे ही समाज की निर्मिती के लिए सुयोग्य व्यक्तियों के निर्माण में लगा है। अपने इस सनातन राष्ट्र की विशिष्ट पहचान, देश की अखंडता व सुरक्षा का आधार, समाज की एकात्मता का सूत्र तथा पुरुषार्थी उद्यम का स्रोत, तथा विश्व के सुख शांतिपूर्ण जीवन की अनिवार्य आवश्यकता हिन्दुत्व ही है, यह अब सर्वमान्य है और अधिकाधिक स्वतःस्पष्ट होते जा रहा है। अढ़ाई दशक पहले श्री विजयादशमी उत्सव के इसी मंच से संघ के उस समय के पू. सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस के इस कथन को कि - 'भारत में पंथनिरपेक्षरता, समाजवाद व प्रजातंत्र इसीलिए जीवित है क्योंकि यह हिन्दुराष्ट्र है', आज श्री एम.जे अकबर व श्री. राशिद अलवी जैसे विचारक भी लिख बोल रहे हैं। सभी विविधताओं में एकता का दर्शन करने की सीख देनेवाला, उसको सुरक्षा तथा प्रतिष्ठा देनेवाला व एकता के सूत्र में गूंथकर साथ चलाने वाला हिन्दुत्व ही है। हिन्दुत्व के इस व्यापक, सर्वकल्याणकारी, व प्रतिक्रिया तथा विरोधरहित पवित्र आशय को मन-वचन-कर्म से धारण कर इस देश का पुत्ररूप हिन्दु समाज खड़ा हो। निर्भय एवं संगठित होकर अपनी पवित्र मातृभूमि भारतमाता, उज्ज्वल पूर्वज-परंपरा तथा सर्वकल्याणकारी हिन्दू संस्कृति के गौरव की घोषणा करें यह आज की महती आवश्यकता ही नहीं, अनिवार्यता है। स्वार्थ और भेद के कलुष को हटाकर परमवैभवसंपन्न, पुरूषार्थी दिग्विजयी भारत के निर्माण के लिए सब प्रकार के उद्यम की पराकाष्ठा करें। संपूर्ण विश्व को समस्यामुक्त कर सुखशांति की राह पर आगे बढ़ायें। सब प्रकार की विकट परिस्थितियों का यशस्वी निरसन करने का यही एकमात्र, अमोघ, निश्चित व निर्णायक उपाय है।

इसलिए नित्य शाखा की साधना के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को हिन्दुत्व के संस्कारों तथा गौरव से परिपूरित कर, निःस्वार्थ व भेद तथा दोष से रहित अंतःकरण से तन-मन-धन पूर्वक देश, धर्म, संस्कृति व समाज के लिए जीवन का विनियोग करने की प्रेरणा व गुणवत्ता देकर, सम्पूर्ण समाज को संगठित व शक्तिसंपन्न स्थिति में लाने का संघ का कार्य चल रहा है। पूर्ण होते तक इस कार्य को करते रहने के अतिरिक्त संघ का और कोई प्रयोजन अथवा महत्वाकांक्षा नहीं है। केवल आवश्यक है, इस पवित्र कार्य को समझकर, उसे अपना कार्य मानकर आप सभी सहयोगी भाव से इसमें जुट जायें। यही आपसे विनम्र अनुरोध तथा हृदय से आवाहन है। ❑

दूध गंगा योजना

कृषि को बढ़ावा देने के लिये वर्तमान सरकार न कई योजनाएं आरम्भ की हैं जिनमें 'दूध गंगा योजना' और 'पंडित दीनदयाल किसान बागवान समृद्धि योजना' महत्वाकांक्षी योजनाएं हैं जिनका संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है।

राज्य में दुग्ध उत्पादन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये 300 करोड़ रुपये की दूध गंगा योजना आरम्भ की गई है। योजना के अंतर्गत दुग्ध उत्पादकों, विशेषकर महिला स्वयं सहायता समूहों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। योजना से 50,000 ग्रामीण परिवार लाभान्वित होंगे।

योजना के लाभ

अधिकतम 10 गाय खरीदने हेतु 3 लाख रुपये का बैंक ऋण।

'दूध बल्क कूलर' लगाने तथा दूध निकालने की मशीन खरीदने हेतु 15 लाख रुपये तक का बैंक ऋण।

दुग्ध उत्पाद निर्माण इकाइयों की स्थापना हेतु 15 लाख रुपये तक का बैंक ऋण।

दूध एंव दुग्ध उत्पादों के परिवहन के लिये 25 लाख रुपये तक का ऋण।

लाभान्वित कृषक समूह को कुल लागत का केवल 10 प्रतिशत देना है। शेष 90 प्रतिशत राशि राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा ऋण के रूप में उपलब्ध कराई जाएगी।

ऋण की 50 प्रतिशत राशि ब्याज मुक्त है तथा लाभान्वित द्वारा ऋण की नियमित अदायगी करने पर ब्याज राशि पर 50 प्रतिशत उपदान मिलेगा।

पशुपालक अपनी सुविधानुसार दुधारू पशु को प्रदेश या प्रदेश के बाहर से खरीद सकता है।

दूध गंगा योजना का उद्देश्य

उन्नत नस्ल के दुधारू पशुओं की संख्या तथा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि। किसानों, विशेषकर महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना। दूध एवं दुग्ध उत्पादों के लिये बेहतर विपणन सुविधाएं प्रदान करना।

योजना के अंतर्गत लाभ लेने के लिये क्या करें :

योजना के अंतर्गत कोई भी आवेदक अथवा स्वयं सहायता समूह के सदस्य किसी भी सहकारी/राष्ट्रीयकृत बैंक से दुधारू पशु खरीदने के लिये ऋण हेतु आवेदन कर सकते हैं।

स्वयं सहायता समूह का प्रधान व सचिव अपने नजदीक के पशु चिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनवा कर सम्बंधित बैंक में जमा करें।

प्रोजेक्ट रिपोर्ट के साथ स्वयं सहायता समूह द्वारा ऋण लेने हेतु प्रस्ताव, पैसे के लेन-देन बारे अधिकार पत्र, स्वयं सहायता समूह की मोहर का नमूना और स्थानीय बैंक का अनापत्ति प्रमाण पत्र भी संलग्न करें।

बैंक का करार पत्र 5 रुपये के स्टाम्प पेपर पर टाइप करवाकर स्वयं सहायता समूह के सभी सदस्यों को बैंक में जाकर हस्ताक्षरित करना होगा।

योजना के तहत यदि कोई आवेदक अकेले ऋण लेना चाहता हो तो उसे 50 हजार रुपये से अधिक के ऋण की गारंटी जमीन के कागजात के रूप में देनी होगी और 10 रुपये के स्टॉम्प पेपर पर करार पत्र भी देना होगा।

स्वयंसहायता समूह को ऋण खाते में 10 प्रतिशत 'मार्जिन मनी' जमा करवानी होगी। उपरोक्त औपचारिकताएं पूर्ण करने के बाद बैंक द्वारा ऋण की स्वीकृति दी जाएगी।

पंडित दीन दयाल किसान-बागवान समृद्धि योजना

किसानों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से 353 करोड़ रुपये की पंडित दीनदयाल किसान-बागवान समृद्धि योजना के अंतर्गत पॉलीहाउस व सूक्ष्म सिंचाई इकाइयों के निर्माण के लिये 80 प्रतिशत उपदान की व्यवस्था की गई है।

योजना के अंतर्गत लाभ उठाने के लिये क्या करें-

अपनी जमीन के कागज (जमाबंदी) के साथ अपने ब्लॉक के विषय वस्तु विशेषज्ञ/कृषि अधिकारी के पास जाएं तथा वहां एक प्रार्थना पत्र भरें।

10 दिनों में कृषि विभाग के अधिकारी आपके पास आएंगे तथा पॉलीहाउस निर्माण स्थल का निरीक्षण करेंगे।

अधिकारी पांच दिनों में निरीक्षण रिपोर्ट जिला नोडल अधिकारी को देंगे। इसके 10 दिनों में आपको पॉलीहाउस की स्वीकृति प्रदान की जाएगी।

कृषि विभाग द्वारा 6 वर्गमीटर से 1000 वर्गमीटर तक के पॉलीहाउस मॉडल तैयार किये गए हैं। आप अपनी आवश्यकतानुसार कोई भी मॉडल चुन सकते हैं तथा 1000 वर्गमीटर क्षेत्र में पॉलीहाउस लगा सकते हैं।

आप स्वयं भी पॉलीहाउस बना सकते हैं अथवा कृषि विभाग ने इस सुविधा के लिये 35 कम्पनियों को पंजीकृत किया है, जिन से आप पॉलीहाउस बनवा सकते हैं। ❑

'स्व' का प्रखर अभिमान ही कोरिया की प्रगति का रहस्य है

भारत वर्ष 1947 में 15 अगस्त को स्वतंत्र हुआ और दक्षिण कोरिया ठीक एक साल बाद सन् 1948 के दिन ही देश के रूप में अस्तित्व में आया। फिर भी आज द. कोरिया आर्थिक रूप से अत्यंत समृद्ध है, वहां की बनी चीजें दुनिया भर के बाजारों में बिकती हैं। ओलम्पिक खेलों में यह देश बड़े-बड़े देशों से टक्कर लेता है।

दक्षिण कोरिया का क्षेत्रफल हमारे बिहार राज्य के बराबर है तथा आबादी भी लगभग बिहार जितनी ही है, लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विभाजित हुआ यह देश आगे बढ़ गया और हम पीछे रह गए। ऐसा क्यों हुआ? भारत के ख्यातनाम कृषि वैज्ञानिक एसएस लोढ़ा कई वर्षों तक इस देश में कृषि विशेषज्ञ के रूप में रहे हैं। उन्होंने द. कोरिया की प्रगति का एक ही कारण बताया- प्रखर राष्ट्रीयता का भाव।

कोरिया के विभाजन के समय द. कोरिया में चार भाषाएं प्रचलित थीं। देश के गठन के समय ही 'कोरियाई' को राष्ट्र भाषा बनाने का निर्णय हो गया। दस सालों में कोरिया के प्रत्येक व्यक्ति ने इसे सीख लिया और अब वहां का सम्पूर्ण कार्य इसी भाषा में होता है। अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा विज्ञान की उच्च शिक्षा भी कोरियाई भाषा में दी जाती है। वहां के राजनेता या अधिकारी चाहे देश में हो या विदेश में हमेशा अपनी राष्ट्रभाषा का ही प्रयोग करते हैं। अन्य देशों से कोरिया आने वाले या तो वहां की भाषा सीखते हैं या उन्हें सदैव दुभाषिया अपने साथ रखना पड़ता है।

वहां के लोगों का अनुशासन भी अनुकरणीय है। चाहे कैसी भी परिस्थिति हो कोरियाई लोग अपने देश में बनी वस्तु ही उपयोग में लाते हैं। वहां के लोगों को चावल बहुत पसंद है। यही उनका मुख्य भोजन है, किन्तु आवश्यकता की पूर्ति जितना चावल वहां नहीं होता। इसलिए वहां एक नियम बना दिया गया है कि सप्ताह में एक दिन, मंगलवार को कोई चावल नहीं खाएगा। इस नियम का सभी कोरियावासी कड़ाई से पालन करते हैं। क्या मजाल कि कोई बच्चा भी मंगलवार को चावल चख ले। स्वयं प्रेरणा से वे इस नियम का पालन करते हैं। (साभार : पाथेयकण)

प्रार्थना से सुधरता है स्वास्थ्य

अब पश्चिमी देशों के लोग भी मानने लगे हैं कि प्रार्थना, पूजा-पाठ, जप-तप-व्रत से कई समस्याओं का समाधान होता है। हाल ही में इंग्लैंड के शोधकर्ताओं ने शोध के पश्चात जानकारी प्राप्त की कि प्रार्थना से मरीज का स्वास्थ्य तेजी से सुधरता है। यह शोध इंडियाना यूनिवर्सिटी के एक दल ने धार्मिक शिक्षा की प्रोफेसर कैंडी गुंथर के नेतृत्व में किया है। ये शोध मोजांबिक और ब्राजील में भी किये गए थे।

कमला लक्ष्मी को अमरीका में पुरस्कार

भरतनाट्यम नृत्यांगना कमला लक्ष्मी नारायण को अमरीका में लोककला के क्षेत्र में अपने अभूतपूर्व योगदान के लिये देश के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। अमरीका में भरतनाट्यम को पहली बार ये पुरस्कार मिला है। भारतीय मूल की कमला लक्ष्मी नारायण अमरीका का प्रतिष्ठित एनईए नेशनल हेरिटेज फेलोशिप पुरस्कार पाने वाले उन नौ लोगों में शामिल हैं जिन्हें इस वर्ष ये पुरस्कार दिया गया है। पारम्परिक लोककला के क्षेत्र में दिया जाने वाला ये अमरीका का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार है। ❑

चाणक्य को नीदरलैंड में मान्यता

कौटिल्य की नीतियां और दर्शन जिसे चाणक्य के नाम से जाना जाता है, को अब भारत के बाहर नीदरलैंड में भी मान्यता मिल गई है। विश्व के इस प्रथम मैनेजमेंट गुरु की राजनीतिक नीतियों और वित्तीय प्रबंधन पर लिखी गई पुस्तक को एक स्थानीय स्वयंसेवी संगठन ने डच भाषा में तैयार करवाया है। संस्था की ओर से जारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि कौटिल्य के वित्तीय प्रबंधन और आर्थिक प्रशासन नीतियों पर 2009 में कौटिल्याज् अर्थशास्त्र नाम से अंग्रेजी में पहली बार पुस्तक प्रकाशित की गई थी। अब यह प्रान सोल्यूशंस, मल्टीलिब्रि और मुम्बई के स्वयंसेवी संगठन प्रियदर्शनी अकादमी के सहयोग से डच भाषा में प्रकाशित की गई है। ❑

... तो पाक में घुसकर मारेंगे आतंकियों को

पाकिस्तान में दिनों-दिन बढ़ रहे आतंकी हमलों को देखते हुए अमरीकी सैन्य कमांडर ने पाकिस्तान को चेतावनी दी है। जनरल डेविड पेट्राउस ने कहा- पाक सेना पश्चिमोत्तर क्षेत्र के कबायली इलाकों में आतंकी संजाल को खत्म करने की कार्यवाही तेज करे अन्यथा अमेरिकी सेना पाकिस्तान में बड़ा अभियान चला सकती है। न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार अमेरिकी कमांडर की यह चेतावनी अमेरिकी अधिकारियों में बढ़ती निराशा का सूचक है। उनका मानना है कि पाकिस्तान, कबायली इलाकों में आतंकियों के खिलाफ पुख्ता कदम उठाना ही नहीं चाहता। ❑

दिमागी हलचल

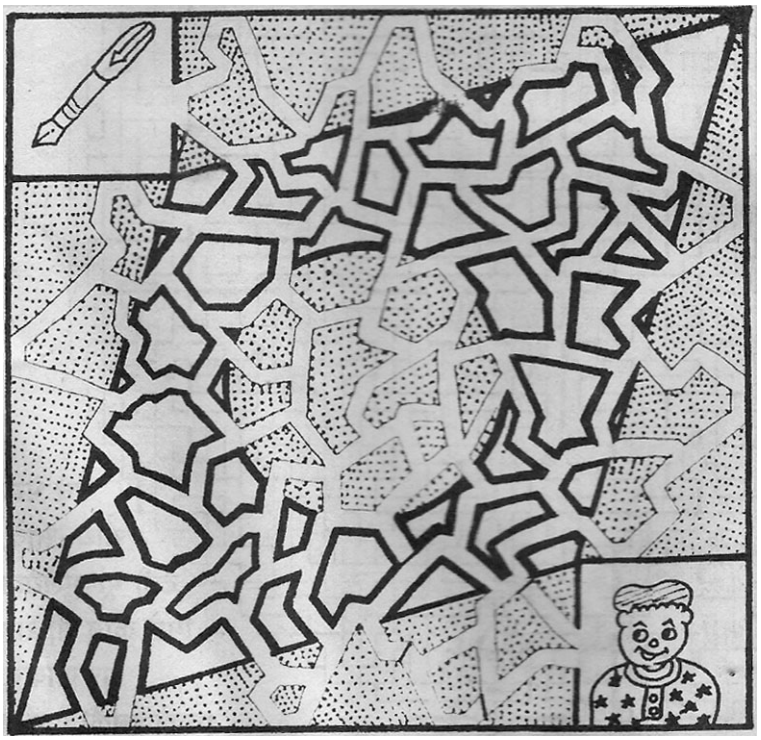

कलम छुपा दी, मित्र ने, करते हुए, मजाक। इसे खोजकर देख लो, तुम कितने चालाक?

कहां छुपे हैं देश ये सारे

- हमने पाल साहब का भाषण सुना।
- सूची नहीं मिल रही है।
- आभा रतन को बुलाकर ला।
- सोहन जा पान लेकर आ।
- दिल्ली के नियारे लाल आ रहे हैं।
- शंभू टान पर मत चढ़।
- उसको रिया ने खाने पर बुलाया है।
- मेरे घर की लाइट लीना ने बंद कर दी।
- महक नाडा लेकर आयी।
- रूचि लीला के साथ पढ़ती है।

पिछले अंक के उत्तर :

प्रश्नोत्तरी : 1. उत्तराखण्ड, 2. महाराष्ट्र, 3. एक, 4. 18, 5. मदन मोहन मालवीय जी , 7. मार्गरेट नोबेल, 8. अमृतसर, 9. जैन पंथ, 10. पाणिनी ने।

उलझन सुलझाईये

प्रश्न 1 : चित्र की भांति तीली रखें।

तीन तिलियों को खिसका कर इस पिरामिड को उल्टा बनाए।

प्रश्न 2 : चित्र की भांति तीली रखें।

तीन तिलियों को इस प्रकार हटाएं कि केवल पांच खाने बच सकें।

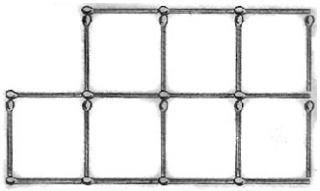

प्रश्न 3 : WINDOW का पति कौन है?

उत्तर : 'N' क्योंकि N के मरते (हटते) ही WIDOW (विधवा) हो जाती है।

धैर्य बनाए रखें

अनेक लोग काम करते समय बहुत उतावले हो जाते हैं; वे चाहते हैं कि जो भी होना हो, तुरंत हो जाए, लेकिन ध्यान में सदा अपना लक्ष्य और सफलता ही रहनी चाहिये। इस सम्बंध में छत्रपति शिवाजी का यह प्रसंग महत्वपूर्ण है।

बीजापुर के शासक आदिलशाह ने जब देखा कि शिवाजी अपना साम्राज्य बढ़ाते जा रहे हैं, तो उसने कई सूरमाओं को उन्हें परास्त करने भेजा; पर जो भी गया, वह मार खाकर ही लौटा। परेशान होकर आदिलशाह ने अपने सबसे मजबूत योद्धा अफजल खां को शिवाजी को जिन्दा या मुर्दा लेकर आने को कहा।

अफजल खां विशाल सेना लेकर चल दिया। मार्ग में उसने सैकड़ों मंदिरों को ध्वस्त किया। हजारों गायों की हत्या की। खेतों में खड़ी फसलों को आग लगा दी। महिलाओं को अपमानित किया। लोग शिवाजी को जाकर शिकायत करते थे; पर वे शांत बैठे रहे।

इससे अफजल खां का साहस बढ़ गया। उसने पंढरपुर का प्रसिद्ध विठोबा का मंदिर और शिवाजी की कुलदेवी तुलजा भवानी का मंदिर भी तोड़ डाला। लोग त्राहि-त्राहि करने लगे। कई लोग तो शिवाजी को भला-बुरा भी कहने लगे- कहां है वह हिन्दू रक्षक; कहां छिपा बैठा है; लगता है वह भी अफजल खां से डर गया है?

पर शिवाजी ने धैर्य नहीं खोया। वे अपनी योजना से चल रहे थे। उन्होंने ऐसा वातावरण बनाया कि अफजल खां उनसे मिलने पहाड़ी पर स्थित प्रतापगढ़ के किले तक आ पहुंचा। वहां शिवाजी ने उसके पेट में बघनखा भोंककर उसे यमलोक पहुंचा दिया। केवल इतना ही नहीं, किले के आसपास छिपे सैनिकों ने उसकी सेना के एक आदमी को भी जीवित नहीं छोड़ा।

यदि शिवाजी धैर्य खो देते, तो वे सफल नहीं होते। इसलिये ध्यान सदा अंतिम लक्ष्य और सफलता की ओर ही रखना चाहिये। ❑

हंसते-हंसते

☺ गुल्लू काफी देर से रो रहा था।
पापा ने रोने का कारण पूछा
गुल्लू बोला, 'पहले पांच रुपये दें, फिर बताऊंगा।'
पापा ने पांच रुपये दिये और कहा अब बताओ।'
गुल्लू, 'यह पांच रुपये लेने के लिये तो रो रहा था।'

☺ एक बच्चा लाइब्रेरी में जाकर वहां की मैनेजर से बोला, 'मैडम मुझे पानीपत पर मुगलों की चढ़ाई के बारे में कोई पुस्तक चाहिये।'
मैनेजर बोली, 'पर्वतारोहण पर सभी पुस्तकें अलमारी नम्बर पांच में मिलेंगी।'

☺ डॉक्टर 'भई मैं कोई सम्पादक नहीं, डाक्टर हूं। मुझे कविता नहीं अपनी बीमारी बारे बताओ।'
युवक, 'जनाब मुझे कविता सुनाने की ही बीमारी है।'

☺ पिता (अध्यापक से), 'सर मेरा बेटा इतिहास में कैसा है? वैसे मैं जब स्कूल में था तो मैं इस विषय में बहुत कमजोर था।'
अध्यापक, 'मैं तो यही कहूंगा कि इतिहास अपने आप को दोहरा रहा है।'

प्रश्नोत्तरी

नीचे 10 प्रश्न दिये गए हैं। अपने सामान्य ज्ञान की परीक्षा कीजिये और देखिये कि आप कितने प्रश्नों के उत्तर जानते हैं। सही उत्तर अगले अंक में देखिये-

1. किन दो देशों में चाय की खपत सबसे अधिक होती है?
2. मानवीय शरीर में ऊर्जा को किस इकाई में मापते हैं?
3. भूकम्प के झटके किस उपकरण से रिकॉर्ड किये जाते हैं?
4. किस देश ने कभी भी अपनी डाक टिकटों पर अपना नाम नहीं लिखा?
5. पटना का प्राचीन नाम क्या है?
6. किस पक्षी का अण्डा सबसे बड़ा होता है?
7. 'जन गण मन' के रचयिता का नाम बताएं?
8. भारत का राष्ट्रीय गीत 'वन्देमातरम्' किस उपन्यास से लिया गया है?
9. भारत के राष्ट्रीय चिन्ह में लिखित 'सत्यमेव जयते' का क्या अर्थ है?
10. भारतीय तिरंगे के मध्य में स्थित अशोक चक्र में कितनी छड़ें हैं?